चन्दामामा
अक्तूबर १९९०

NOW with the added fun of SPUTNIK Junior!
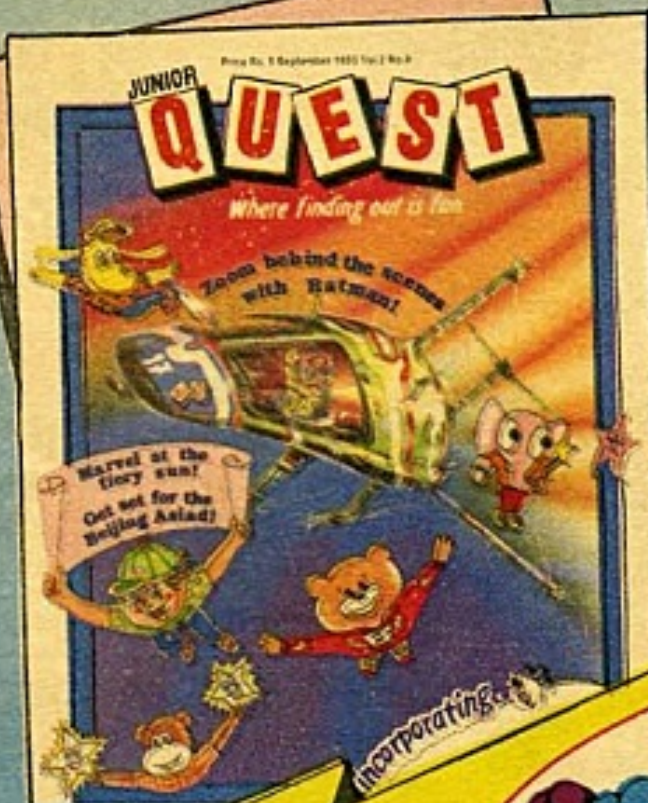
Selections from Sputnik Junior!.

* Colourfully illustrated stories and cartoons.
* Superb science fiction
* Entertainment and general knowledge

64 packed pages!
At just Rs. 5/-

Sputnik Junior

To subscribe write to,
JUNIOR QUEST,
Dolton Agencies,
Chandamama Buildings,
N.S.K. Salai, Vadapalani,
Madras: 600 026.

A Chandamama Vijaya Combines publication

डायमंड कॉमिक्स

अंकुर बाल बुक क्लब

सदस्य बनने के लिए आपको क्या करना होगा :

1. संलग्न कूपन पर अपना नाम व पता भर कर भेज दें। नाम व पता साफ-साफ लिखें ताकि पढ़ने में आसानी हो।
2. सदस्यता शुल्क दस रुपये मनीआर्डर या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें। सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
3. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 2/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम चार पांच पुस्तकें निर्धारित करेंगे यदि आपको वह पुस्तकें पसन्द न हो तो डायमंड कामिक्स व डायमंड पाकेट बुक्स की सूची में से चार पांच पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम चार से पाँच पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।
4. आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा। यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें 4 से 5 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
5. इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।

सदस्यता कूपन

मुझे अंकुर बाल बुक क्लब का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क दस रुपये मनी आर्डर/डाक टिकट के साथ भेजा जा रहा है। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता हूँ/करती हूँ।

नाम ....

पिता का नाम ....

पता ....

डाकखाना .... जिला ....

नोट: सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी।

डायमंड कामिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

कॉलेज में बायोलॉजी लें या जियोलॉजी
दोस्तों में टॉपर बनने के लिए क्लिअरेसिल है कम्पल्सरी.

क्योंकि क्लिअरेसिल त्वचा यानी ज़्यादा साफ़ त्वचा.

विषय जब दोस्त बनाने का हो, क्लिअरेसिल ऐसा फॉर्मूला है जो कभी फ़ेल नहीं जाता.

जब त्वचा ज़्यादा साफ़ हो तब अपने आप सबकी नज़रें आपकी तरफ खिंची चली आती हैं.

क्लिअरेसिल तीन तरह से मुंहासों पर अपना असर दिखाती है.

एक-यह मुंहासों के अन्दर तक जाती है. दो-ज़्यादा चिकनाई हटाती है. और तीन-मुंहासों को सुखाकर मिटा देती है.

क्लिअरेसिल त्वचा, ज़्यादा साफ़ त्वचा • क्लिअरेसिल त्वचा, ज़्यादा साफ़ त्वचा

बात साफ़ है, मुंहासों के लिए क्लिअरेसिल से बेहतर कोई और इलाज नहीं.

मुंहासों को अपने रास्ते की रुकावट मत बनने दीजिए

क्लिअरेसिल लगाइए, और मित्र बनाने के साइन्स में फर्स्ट-क्लास नम्बर पाइए.

मुंहासों के लिए इससे बेहतर कोई और इलाज नहीं.

क्लिअरेसिल त्वचा, ज़्यादा साफ़ त्वचा • क्लिअरेसिल त्वचा, ज़्यादा साफ़ त्वचा

Enterprise/PG/CC/P/1/Hn a

MAGGI CLUBBERS
FUN LOVERS
MAGGI
CLUB
लॉज़ ऑफ़ दि जंगल गेम
स्नैप सफ़ारी गेम
मैगी क्लब: आओ मनाएं जंगल में मंगल!
अपने उपहार मुफ़्त लो!
मैगी नूडल्स के 5 खाली रैपरों के आगे वाले हिस्से से यह चिन्ह काटो और अपनी पसंद के मुफ़्त उपहार पाने के लिए हमें भेज दो. 6 से 8 हफ़्तों में तुम्हें मैगी क्लब की ओर से एक रोचक व आकर्षक उपहार मिल जाएगा.
यह मत भूलो :
अगर तुम मैगी क्लब के सदस्य नहीं हो तो हमें लिखते समय अपने मनचाहे उपहार के नाम के साथ अपना नाम और पता ज़रूर लिखना. और यदि तुम पहले से मैगी क्लब के सदस्य हो तो अपना मेम्बरशिप नम्बर भी साथ भेजना.
डिज़्नी टुडे कॉमिक
फ़ॉरेस्ट फ़ेसिज़ कैप और मास्क
जंगल स्टैन्डीज़ सेट
MAGGI
2-minute noodles
हमारा पता है : दि मैगी क्लब
पी.ओ. नं. : 5788, नई दिल्ली-110055
और यही नहीं : अगर तुमने अभी तक 'ट्रैवल इंडिया गेम' नहीं लिया है तो आज ही लो!
HTA 6679 HIN

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

मातृ उपासना

अभी हाल में हम ने 'दैवी माँ' की उपासना की, देश भर में दशहरे का उत्सव मनाया । 'माताश्री' एक आदरपूर्ण विचार है, जो अपने प्राचीन सिद्ध पुरुषों द्वारा परंपरागत रूप में हमें अक्षय-धन स्वरूप प्राप्त हुआ है । इस विचार के प्रति भक्ति के बिना दैवी माँ की उपासना अधूरी ही रह जाएगी । इस विचार के अनुसार 'मातृ-भूमि' और 'मातृ-पृथ्वी' भी माताश्री के समान हैं । जैसे मानवी माताश्री हमारा पालन-पोषण करती रहती है, वैसे ही मातृ-भूमि और मातृ-पृथ्वी भी हमारे पालन-पोषण का काम सदैव करती रहती हैं । इस लिए इन की भी पूजा करना हमारा कर्तव्य है । मातृ-भूमि के लिए हानि पहुँचानेवाला कोई काम हमें करना नहीं चाहिए । जंगल-पर्वत जैसी पृथ्वी-माता की संपदा हमें उस से छीननी नहीं चाहिए । धरतीमाता की अपूर्व संपत्ति रहे जल तथा वायु का प्रदूषण हमें होने नहीं देना चाहिए ।

'दैवी माँ' की उपासना में हम जो उत्सव मना रहे हैं, वह तभी सार्थक और सहेतुक सिद्ध होगा ।

वर्ष : ४३ | अक्तूबर १९९० | अंक : २

एक प्रति : रु. ३/- | वार्षिक चन्दा : रु. ३६/-

जो भी खाये, दोस्त बन जाये!
लड़ाकू-पढ़ाकू, मोटू-पतलू, छोटू-लम्बू, दोस्त बनेंगे
सब के सब नई हाज़मोला कैन्डी खाकर।
चटपटी है! स्वादभरी है!
खट्टी-मीठी कैन्डी की हर बात है मज़ेदार!
आए छोटे – प्यारे 'पिलो पैक' में।
साथ रख सकें, खेलते-कूदते जहाँ
भी जाएँ। पार्टी हो या पिकनिक,
घर हो या स्कूल, नई खट्टी-मीठी
हाज़मोला कैन्डी खुद भी खाओ,
सबको खिलाओ। और
प्यारे-प्यारे दोस्त बनाओ।
नई
खट्टी-मीठी
Hajmola®
CANDY
Hajmola
CANDY
everest/90/DIL/265 HIN
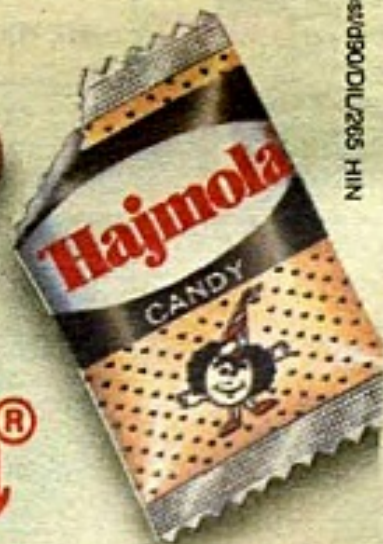
फिजी में भारतीयों की परेशानियाँ

नैऋत्य पॅसिफिक महासागर में सन् १६४३ ई. में ८०० द्वीपों की खोज की गई । उन्हीं द्वीपों के समुदाय को 'फिजी' कहा जाता है । सन् १८७४ ई. में फिजी ब्रिटिश पालकों का प्रवास-प्रांत बन गया । १८,३७६ वर्ग कि.मी. विशाल फिजी में साढ़े सात लाख लोग रहते हैं । 'सुवा' इस द्वीपसमुदाय की राजधानी है ।

१९ वीं शताब्दी के अंतिम दो दशाब्दों में भारत से हज़ारों लोग ईख के खेतों में काम करने के लिए फिजी द्वीपों में गये और फिर वहीं बस गये । उन्हीं भारतीयों के वंशज आज फिजी की आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति के लिए अपना योगदान दे रहे हैं ।

सन् १९७० ई. में. फिजी को स्वतंत्रता मिली । आजकल फिजी की जनता में पचास प्रतिशत लोग तो उन मूल भारतीयों के वंशज हैं । फिर उन द्वीपों के प्रथम निवासी मेलनेशियन ४७ प्रतिशत हैं और बाक़ी ३ प्रतिशत युरेशियन और चीनी हैं । इस का यह मतलब है कि फिजी में भारतीयों के वंशजों की संख्या ही सब से अधिक है ।

प्रजातंत्र पद्धति के अनुसार हुए चुनाव में भारतीयों के वंशजों में एक डॉ. तिमोसि बवाद्र फिजी का प्रधान मंत्री बना । लेकिन सेनाध्यक्ष जनरल सिटिवेनी रबूका ने हठात विद्रोह किया और बवाद्र मंत्री-मंडल को खारिज़ कर दिया । उस ने कहा कि फिजी के प्रथम वासी मेलनेशियनों की अधिकता कायम रखना ही अपना प्रमुख लक्ष्य है ।

रबूका अब पार्लमेंटरी चुनाव के द्वारा प्रधान मंत्री बनना चाहता है। अपनी इच्छा को सफल बनाने के लिए उस ने एक नया कानून बनाया, जिस के अनुसार भारतीयों के वंशज अधिक संख्यक होते हुए भी अपनी सरकार नहीं बना सकते। एक तरह से रबूका फिजी का तानाशाह बनने के सपने देख रहा है।

आज दुनिया भर में रंगभेद के विरोध में संघर्ष चल रहा है। रंगभेद को मानना अनागरिक और बर्बर समझा जा रहा है। ऐसे समय में रबूका कौमपरस्त हो कर कौमी भेद-भाव की आग भड़काने की कोशिश कर रहा है।

इस के परिणाम स्वरूप फिजी के भारतीयों के वंशज आज अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। अनेक प्रकार के हिंसात्मक विधानों के शिकार होते जा रहे हैं।

फिजी की खास आमदनी पर्यटन-स्थानों और गन्ने की फसल पर आधारित है। देश की अंदरूनी अव्यवस्था के कारण आमदनी के ये दोनों स्रोत सूखते जा रहे हैं। अगर रबूका अपने प्रयत्नों में सफल हुआ तो फिजी में प्रजातंत्र के मूल्यों का हनन होगा, आर्थिक स्थिति और बिगड़ेगी, और फिजी को निर्धनता की दलदल में धँस जाना होगा।
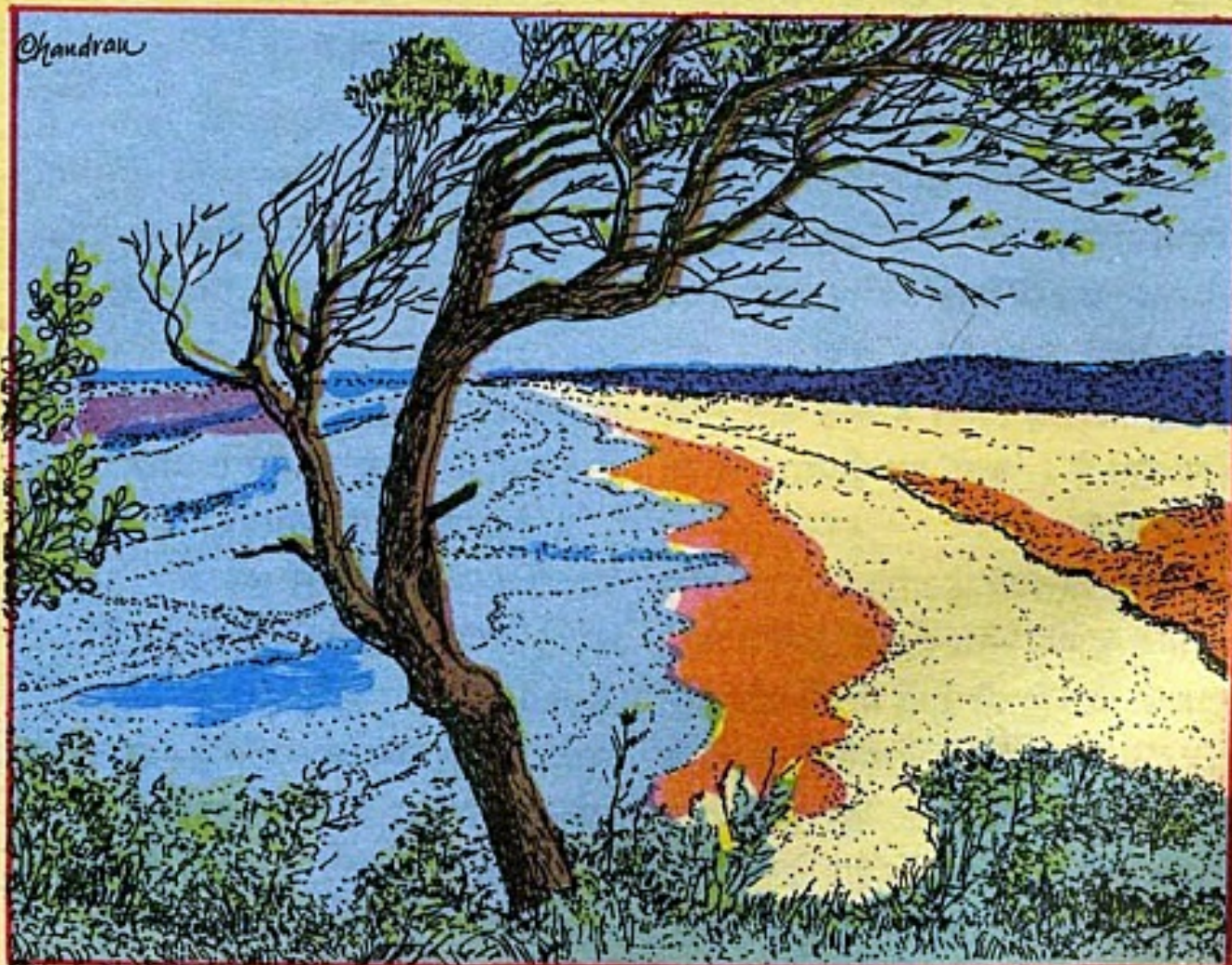
बहू की मुसीबतें

बात पुरानी है । किसी नगर में एक सरकारी कर्मचारी रहता था, जिस का नाम था रविचन्द्र । रविचन्द्र नौजवान था, पर अभी उस की शादी नहीं हुई थी । वह अपने एक दोस्त की शादी में गया था, जहाँ उस ने स्वाती नामक एक लड़की को देखा । स्वाती सुंदर थी, मिलनसार थी और शादी के विविध कामों में फुर्ती से हाथ बँटा रही थी । रविचन्द्र को मालूम हुआ कि वह एक ग़रीब परिवार की लडकी है । फिर भी, रविचन्द्र उस की ओर खूब आकर्षित हुआ ।

रविचन्द्र स्वाती के माँ-बाप से मिला, अपना परिचय देते हुए उसने कहा-"मैं एक सरकारी कर्मचारी हूँ । बहुत साल पहले मेरे पिताजी का देहान्त हुआ । मेरी माँ है, पर वह दहेज के पीछे पागल है.। अगर स्वाती को मंज़ूर हो तो मैं अभी इसी मुहूर्त पर उस से शादी करने के लिए तैयार हूँ । हाँ, अगर पहले ही इस बात का पता चला तो माँ यह शादी नहीं होने देगी । शादी के बाद माँ को समझाया जा सकता है ।"

स्वाती के माँ-बाप ने रविचन्द्र के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया । स्वाती ने भी इस विवाह को स्वीकृति दी । इस तरह दोस्त की शादी के साथ रविचन्द्र की भी शादी हो गई । फिर पत्नी स्वाती को लेकर रविचन्द्र नगर लौट आया ।

स्वाती को डर था कि अपने पति के मुँह से शादी की बात सुन कर सास गुस्सा करेगी और हंगामा खड़ा कर देगी । मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ । स्वाती की सास ख़ामोश हो बेटे के मुँह से सारी बात सुनती रहीं, फिर उस ने बहू से कहा – "बेटी, दायें पैर को आगे बढ़ा कर ड्योढ़ी पार करो ।" उस स्वर की मृदुता और प्रेम भावना देख कर स्वाती ने राहत की साँस ली । उसने सोचा कि सास दुर्गा से उसे कोई

दीप्ति शुक्ला

मुसीबत नहीं झेलनी पड़ेगी ।

रात को भोजन करने के बाद रविचन्द्र ने माँ से कहा—"माँ, इस बात की चिंता मत करना कि तुम्हारी बहू दहेज के साथ नहीं आई । स्वाती हर बात में तुम्हारा साथ देगी, घर की मर्यादा में कभी कमी नहीं आने देगी । बड़े आराम से हमारा गुज़ारा हो जाएगा ।"

रविचन्द्र की माँ चुप रही । उस ने सिर्फ मुस्कराकर सर हिलाया ।

दूसरे दिन रविचन्द्र अपने काम पर चला गया । स्वाती पानी लाने के लिए कुएँ पर जाने निकली तो सास दुर्गा ने दाँत पीसते हुए कर्कश स्वर में कहा-"रुक री मायाविनी, मेरे पुत्र पर कौन-सा जादू करके अपने मायाजाल में तुम ने उसे फँसा रखा है? दहेज में दमड़ी भी न लाई, और आई दुल्हन बन कर! शरम नहीं आती तुम्हें?"

सास की ये बातें सुन कर स्वाती को पहले अपने कानों और आँखों पर विश्वास नहीं हुआ । फिर सँभल कर बोली—"माँजी, दहेज-वहेज की बात मैं नहीं जानती । आप के बेटे ने ही मेरे माँ-बाप के सामने शादी का प्रस्ताव रखा और कहा कि हमें एतराज न हो तो वह मुझ से शादी कर लेगा । दहेज की कभी कहीं बात ही नहीं आई ।"

"अच्छा, तो यह बात है! रविचन्द्र तो नौजवान ठहरा, आया शादी करने आगे! मगर तुम्हारे माँ-बाप की अक्ल कहाँ चरने गई थी? कुछ ही दिन पहले रामपुर के रामनाथजी को मेरा बेटा बहुत पसंद आया था, क्यों कि वह सुंदर तो है ही और सरकारी नौकरी में है । रामनाथजी ने मुझ से वादा किया था कि एक लाख रुपये दहेज दे कर वे अपनी बेटी को मेरी बहू बना देंगे । बीच में तुम्हारा बाप शनि बन कर आ धमका और तुम्हें मेरे बेटे के सिर मढ़ दिया! मेरी स्वीकृति के बिना तुम इस घर की बहू बन कर आई हो, इस लिए तुम्हें पाठ ज़रूर पढ़ाना होगा । अगर मेरे बारे में कभी मेरे बेटे से तुम ने शिकायत की तो मैं कुएँ में कूद कर मर जाऊँगी । जाते जाते एक पत्र लिख दूँगी कि मेरी मौत का असली कारण तो तुम हो । ख़बरदार!" दुर्गा ने अपने मन की बात कह कर स्वाती को सचेत कर दिया ।

उसी दिन से दुर्गा ने अपनी बहू पर बदला

लेना शुरू किया । नौकरानी को छुट्टी दे दी, और घर के सभी काम वह अपनी बहू से करवाने लगी । बर्तन माँजना, कपड़े धोना, घर-आँगन को झाड़ना-बुहारना, कुएँ से सारे घर के लिए पर्याप्त पानी खींच कर लाना आदि सभी काम स्वाती अकेली करने लगी ।

रात को जब रविचन्द्र घर लौटता तो स्वाती की सास स्वाती पर झूठा प्यार दिखाती! बेटे से कहती – "अरे पुत्तर्, स्वाती ने आज दो कौर रोटी भी नहीं खाई! अगर इसे कुछ हो गया, तो मैं बेकार बदनाम हो जाऊँगी न?"

एक एक दिन भरपेट खा कर दोपहर के समय सास दुर्गा बड़े आराम से बैठ जाती, और स्वाती को अपने पास बुला कर कहने लगती – "सुन री कंगाल की पुत्तरी! अगर मैं रामनाथ की बेटी को अपनी बहू बना लेती, तो आज मेरे हाथ में एक लाख रुपये होते और मैं महारानी सी रहती! उस नालायक़ ने किसी झोंपड़ीवाली तुम दरिद्रदेवी को ला कर इस घर में ठहरा दिया है! यह सब मेरी ही बदक़िस्मती है! अपना दुखड़ा किस से कहूँ?" फिर सिर पीटकर रोने-चिल्लाने लगती ।

इस तरह पति के घर आने के बाद तुरन्त ही स्वाती की मुसीबतों की शुरूआत हुई ।

एक बार किसी ज़रूरी काम के लिए रविचन्द्र कुछ दिन नगर से बाहर गया । उस के जाने के दूसरे दिन ही स्वाती का स्वास्थ्य काफ़ी बिगड़ गया, उसे तेज़ बुखार चढ़ आया । फिर भी उस पर ध्यान दिए बिना स्वाती की सास किसी की शादी के लिए पड़ोस के गाँव जाने निकली । जाते हुए उस ने बहू से कहा – "देखो, लंघन सब से बेहतर इलाज है । थोड़ा पानी पी लेना और किवाड़-ख़िड़की बंद करके मज़े से सो जाना । कल मैं ज़रा देर से लौटूँगी, तब तक खाना पकाकर तैयार रखना । समझी?" यों आदेश दे कर सास चली गई ।

बुख़ार के कारण स्वाती बहुत कमज़ोर हो गई थी । फिर भी किसी तरह उठ कर उस ने किवाड़-खिड़कियाँ बंद कर लीं । इतने में अचानक मूसलाधार वर्षा शुरू हुई । स्वाती का बुख़ार और बढ़ गया, सर्दी से वह काँपने लगी । वैसे ही सिहरती हुई लेटी रही ।

आधी रात बीती किसी ने दरवाज़ा खटखटाया । काँपते हुए उठकर स्वाती ने किवाड़ खोला । बारिश में खूब भीगी हुई एक लड़की हाथ में संदूक़ लिये द्वार पर खड़ी थी । अंदर आते हुए उस ने कहा -"मेरा नाम है विजया । मुझे माफ़ कीजिए, इस आधी रात के समय मैं ने आप की नींद में ख़लल डाला । एक सहेली की शादी में गई थी, लौटते समय यों बारिश में फँस गई । मैं जिस गाड़ी में आई थी, वह अब चलने की हालत में नहीं है । बैल बीमार हो गया, और गाड़ीवान उसे इलाज कराने ले गया है । मजबूरन आप को कष्ट दे रही हूँ । आज रात के लिए मैं यहीं ठहरना चाहूँगी ।"

पासवाली खाट उसे दिखाते हुए स्वाती ने कहा—"दो दिन हुए, मुझे ज्वर है । अरे, आप तो बहुत भीग गई हैं । पहले कपड़े बदल लीजिए । उस खाट पर आप सो जाइए ।"

विजया ने स्वाती का हाथ पकड़ कर देखा और कहा—"आप को ज़ोर का बुख़ार है । आप सो जाइए ।" फिर विजया ने कपड़े बदल लिए और खाट पर लेट गई ।

सुबह स्वाती की नींद खुली । तब तक विजया जाने के लिए तैयार हो चुकी थी ।

खाट से उतरते हुए स्वाती ने कहा—"थोड़ी देर बाद सास आ जाएँगी । मुझे ज़ल्दी खाना पकाना होगा ।"

उसे रोकते हुए विजया ने कहा—"आप थोड़ी देर लेटी रहिए । मैं आप का नाम नहीं जानती । आप नींद में जो बड़बड़ाती रही, उस से मैं ने आप के घर की हालत बहुत कुछ जान ली । दहेज न लाने की वजह से आप की सास आप को बहुत सता रही है । है न?"

थोड़ी देर स्वाती सिर झुकाए चुप रही, फिर बोली—"आप की बात सही है । मेरी सास को दहेज से बहुत प्यार है । सुना कि रामपुर में रामनाथ महाशय हैं । उन्हों ने दहेज में एक लाख रुपये दे कर अपनी बेटी को इस घर की बहू बनाना चाहा था । लेकिन अपनी माँ से कहे बगैर मेरे पति ने यह शादी कर ली, इस का मेरी सास को बहुत दुख है ।"

यह सब सुन कर विजया को बड़ा आश्चर्य हुआ । उस ने कहा—"अच्छा, तो यह बात

है! आप की सास जब आएगी तो मेरा परिचय देते वक्त, मुझे अपनी सखी बताइए । मैं उस पर एक अचूक मंत्र का प्रयोग करूँगी ।"

इतने में स्वाती की सास दुर्गा थक कर हाँफते हुए आ पहुँची । गले भर गहनों से लदी और रेशमी साड़ी पहनी हुई विजया को देख कर चौंक पड़ी । फिर अपने को सम्हालते हुए पूछा—"कौन हो तुम बेटा?"

"मैं स्वाती की बचपन की सहेली हूँ । एक शादी में गई थी, लौटते समय कल रात इसे देखने के लिए यहाँ रुक गई ।" हँसते हुए विजया ने कहा ।

दुर्गा ने विजया के गले में परख कर देखा और मंगलसूत्र न पाकर जान लिया कि वह कुँआरी है । सोचा, ऐसी अमीर लड़की मेरी बहू बन कर आई होती तो कितना अच्छा होता! फिर उस ने स्वाती से कहा—"बहू, तुम जल्दी खाना तैयार करो ।" स्वाती चुपचाप रसोई-घर में चली गई । स्वाती की ओर इशारा करते हुए दुर्गा ने विजया से कहा—"तुम तो लक्ष्मी जैसी हो! मेरी बहू को देखा न? बिलकुल बिजूका जैसी है ।"

मुस्कराते हुए विजया ने कहा—"मेरी सहेली चाहे बिजूका जैसी हो, फिर भी बड़ी खुशनसीब है । चूँकि माँ जैसी सास उसे मिली है । रात भर स्वाती आप की तारीफ़ करती ही रही ।"

इस पर दुर्गा मन में खुश हुई, पर अपनी खुशी छिपाते हुए बोली—"आजकल सास की तारीफ़ करनेवाली बहुएँ कहाँ मिलती हैं?

स्वाती ने मुझे ज़रूर मुँहज़ोर कहा होगा ।"

"नहीं, नहीं । ऐसा कुछ नहीं कहा । आप के बारे में स्वाती ने एक भी बुरी बात नहीं कही । रामापुर में रामनाथ नामक हमारा एक दूर का रिश्तेदार है । इन्हीं दिनों उस की बेटी की शादी हुई । सुना कि उस की सास बड़ी झगड़ालू है । घर के कामों में उस की ज़रा भी मदद नहीं करती और बहू को हर छोटी बात में सताया करती है । आख़िर उस लड़की ने अपनी सास की छुट्टी कर दी ।" विजया ने ख़बर सुनाई ।

"छुट्टी कर दी? क्या मतलब? अपनी सास को घर से निकाल दिया क्या उस ने?" दुर्गा ने आश्चर्य से पूछा ।

विजया ने गंभीर, रहस्यात्मक स्वर में

कहा—"ऐसा करती तो भी अच्छा होता ! लेकिन उस लड़की ने किसी दवादारू से अपनी सास को सीधे इस लोक से परलोक की यात्रा करा दी ।"

"उफ! इतनी भयानक लड़की है वह? अच्छा हुआ, मैं उसे अपने घर की बहू बना कर नहीं लाई । पहले मैं ने उसे अपनी बहू बनाना चाहा था ।" हाँफते-काँपते हुए दुर्गा ने कहा और खाट पर बैठ गई ।

"उस लड़की की आप सास न हुई, आप तो सचमुच बड़ी ही खुशनसीब हैं । अब मैं चलती हूँ माँ जी!" कहते हुए विजया उठी । रसोई-घर के दरवाज़े के पास खड़ी हो स्वाती ये सब बातें सुन रही थी । इशारे से ही उसे अलविदा कहकर विजया चली गई ।

ये सारी बातें सुनने के बाद दुर्गा में पवरवर्तन आया । उसे इस बात का दुख होने लगा कि इतने दिन वह स्वाती को तकलीफ़ें देती रही ।

यों एक महीना बीत गया । दिन भर बहू के कामों में हाथ बँटा कर सास दुर्गा एक दुपहर को घोड़े बेच कर सो रही थी । इतने में घर के सामने बैल-गाड़ी आ कर रुकी, तो स्वाती झट वहाँ जा पहुँची । गाड़ी में विजया थी ।

विजया ने हँसते हुए पूछा—"तुम्हारी सास में कुछ परिवर्तन आया कि नहीं?"

स्वात अपनीी ने कहा—"अब सास मुझे बड़े प्यार से देख रही है । अपनी बेटी के समान मुझ" लाड़-प्यार दे रही है । लेकिन तुम ने उस रामनाथजी की बेटी पर बड़ी तोहमत लगाई । यह मालूम होने पर उस के मन को बड़ा दुख नहीं होगा?"

इस पर विजया ज़ोर से हँस पड़ी और बोली—"नहीं, नहीं । इस से तुम्हारी जो भलाई हुई, उसे जान कर प्रसन्नता ही होगी । यह बात बिलकुल सच है । मैं दावे के साथ यह कह सकती हूँ, क्यों कि मैं ही रामनाथजी की वह बेटी हूँ ।"

"सच? वाह....!" स्वाती और कुछ बोलना चाहती थी । इतने में हँसते हुए विजया ने कहा—"यह बात अपनी सास को मालूम न होने दो । मैं अपने मामा के यहाँ जा रही हूँ, जब लौट कर आऊँगी तो तुम्हारे घर में एक सप्ताहवक्त, रहूँगी ।"

फिर विजया वहाँ से चल दी ।

डाकू युवराज

१३

(पूर्वकथा: वसन्त के नेतृत्व में विद्रोह करने वाले युवकों को बचाने की कोशिश में राजा शान्तिदेव बुरी तरह घायल होकर मर गया । दुष्ट वीरसिंह के सेनापति कपालकंठ का वसंत ने वध किया । जंगल में जयानन्द मुनि के आश्रम में बढ़ने वाले युवराज के बारे में राजा ने मरने से पहले सब कुछ कह दिया था । उसके बाद –)

महाराजा शान्तिदेव की दी हुई जानकारी के अनुसार वसन्त जंगल में जयानन्द मुनि के आश्रम में जाकर युवराज सन्दीप से मिला था । महारानी की समाधि के नज़दीक ही महाराजा शान्तिदेव के मृत शरीर को दफ़नाया गया । वसन्त की आँखों में आँसू भर आये । अपने दुख के आवेग को बड़े प्रयत्न से उसने दबाया । महाराजा और महारानी की स्मृति में उस ने श्रद्धा के दो फूल चढ़ाये ।

उस क्षण से वसन्त और युवराज के बीच गहरी दोस्ती हो गयी । दोनों बार बार मिलते और आपस में बातचीत करते रहते । युवराज की चतुराई देख कर वसन्त बहुत प्रसन्न हो जाता । मुनि की देखभाल में प्राप्त सुशिक्षा की वह मन-ही-मन खूब प्रशंसा करता । युवराज से मिलना तो अपना वचनबद्ध कार्य था, उस का उत्साह दुगुना बढ़ गया । यह देख मुनि जयानन्द बहुत खुश हुआ । वीरसिंह के
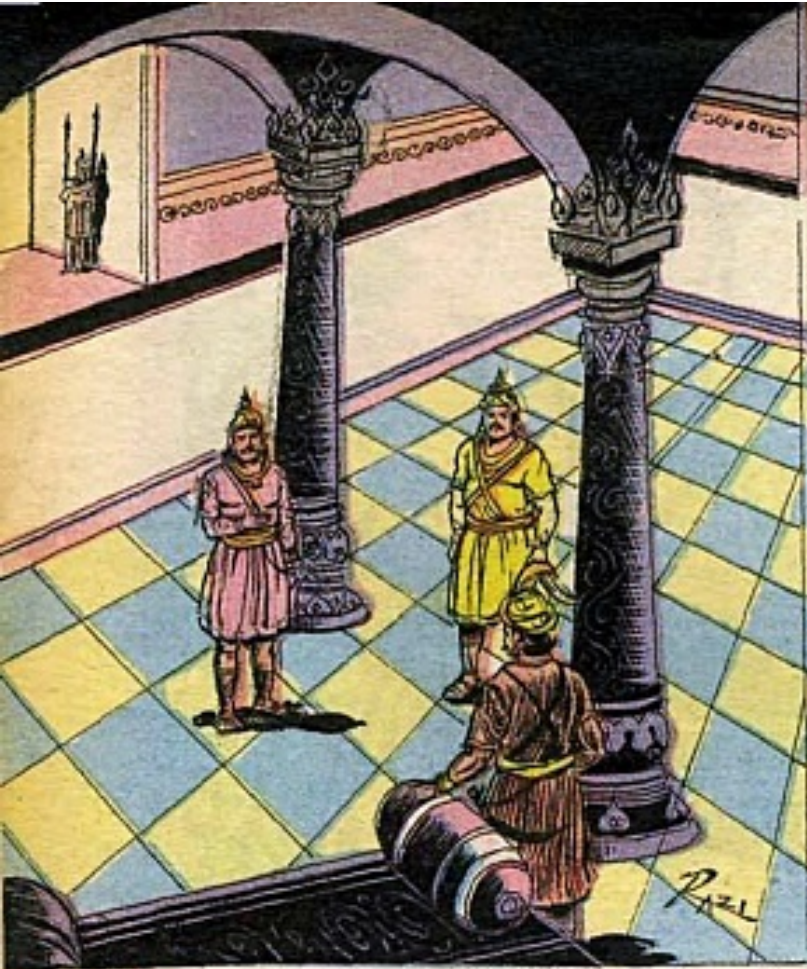
अत्याचारों के बारे में वसन्त के द्वारा सुनकर, उन्हें रोकने के लिये सुमेध राज्य के युवकों के साथ सन्दीप खुद भी लड़ना चाहता था । एक बार उसने वसंत से कहा – "आए दिन इस वीरसिंह की ज़्यादतियाँ बढ़ रही हैं । तुम लोग प्रजा के कल्याण के लिए जी-जान से लड़ रहे हो । मेरा भी तो इस प्रजा के प्रति कुछ दायित्व है । मुझे भी अपना साथी बता कर तुम्हारी मदद के लिए चलो न! क्या मैं इस के लायक नहीं हूँ?" मगर वसन्त ने इसके लिये अनुमति नहीं दी । उसने कहा, "युवराज! आप की जान हमारे लिये बेशक़ीमत है, हम नहीं चाहते कि उस पर कोई आँच आये । उस दुष्ट का अन्त करने में हम ही लगे रहेंगे, आप निश्चिन्त रहिये । जब उचित अवसर आएगा तब आप को भी हमारे साथ लेंगे । तब आप ही हमारा मार्गदर्शन करेंगे, आप ही हमारे नेता बन जाएँगे ।"

युवराजा सन्दीप जंगल में एकाध वीर की तरह संचार करने लगा था । वह गिलहरी की तरह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर लाँघा करता था । तीरंदाजी उसने खुद सीख ली थी निशाना साधकर तीर छोड़ने में वह अपने आप बेजोड़ बना था । पिता जैसा ऊँचा क़द पाकर अब वह बड़ा ही आकर्षक दिखाई देता था ।

एक दिन संदीप ने मुनि से कहा – "गुरुवर, आप के मार्गदर्शन में मैं ने अनेक विद्याएँ सीख लीं । मैं युद्धकला में भी प्रवीण बन गया हूँ । पर मुझे लगता है, मेरी सारी योग्यताओं का मैं समुचित उपयोग नहीं कर रहा हूँ । आप मुझे आज्ञा दीजिए, मैं वसंत का साथी बनकर उस के सत्प्रयत्नों में उसकी मदद करूँगा ।"

मुनि ने हँसते हुए संदीप की पीठ पर हाथ रख कर कहा – "बेटा, तुम्हारा प्रस्ताव सुन कर मुझे बहुत संतोष हुआ । वह समय दूर नहीं है, जब तुम्हारी इच्छा की पूर्ति होगी । बहुत उतावला न बनो । तुम्हें तो बहुत बड़े उत्तरदायित्व को निभाना है ।"

संदीप कुछ आश्वस्त-सा हो गया ।

दिन गुज़रते गये । सुमेध राज्य में सुख-चैन नदारद था । किसान और व्यापारी ज़रा भी सुरक्षित नहीं थे । आम जनता की ज़िन्दगी परेशानियों और तकलीफ़ों से भरी

हुई थी । दूसरी तरफ़ वीरसिंह बहुत कोशिश करने पर भी, अपनी प्रणालियों का विरोध करने वाले विद्रोहियों को दबाने में असफल रहा था । आख़िर एक दिन वीरसिंह ने अपने नये सेनापति सर्पदन्त को बुलाकर कहा, "उन विद्रोही युवकों के अत्याचार अब हम नहीं सह सकते । आज ही हमें उनका अन्त करना चाहिये । उन दुष्टों का बसेरा जंगल है न? हम अपनी सेनाएँ भेजकर सारे जंगल छान मारेंगे ।"

"जी हुज़ूर! अभी मैं सेनाओं को जंगलों में भिजवा दूँगा । आप जो चाहते हैं वही होगा, महाराज!" सर्पदन्त ने कहा ।

"नहीं, तुम नहीं—हम खुद ही सेना का नेतृत्व करके उन्हें जंगलों में ले चलेंगे ।" वीरसिंह ने कहा ।

इस बात पर हक्का-बक्का होकर सर्पदन्त पलभर देखता ही रहा । फिर संभलकर विनीत स्वर में बोला, "माफ कीजिए हुज़ूर! कोई दूसरा शत्रु आकर राज्य पर हमला करे तो खुद आप का सेनाओं का नेतृत्व करना ठीक रहेगा । मगर अपने ही राज्य में खलबली मचानेवाले नाचीज़ लड़कों से लड़ने के लिए आप खुद निकलें, यह कहाँ तक उचित होगा? आप खुद सोचिये ।"

इस बेकार प्रशंसा से वीरसिंह की छाती फूल गयी, मन्दहास करके उसने कहा, "तुम ठीक कहते हो । फिर भी देखो, हम ऐसे खुले आम युद्ध के लिये निकले हुए राजा की तरह नहीं जायेंगे, हम शिकार का बहाना बनाकर

जायेंगे । आख़िर जंगल में ही जाना है न? जंगल के किसी प्रान्त को हम पहले एक ओर से घेर कर, वहाँ के वन्य मृगों को दूसरी ओर खदेड़ते हुए हम लोगों की ओर हाँक लाएंगे । ऐसा करने से जंगली जानवरों के साथ साथ वे दुष्ट विद्रोही भी हमारे चंगुल में फँसेंगे, बच नहीं पाएँगे । इस तरह अन्य सारे जंगल छान मारने पर सारे विद्रोहियों का निर्मूलन होगा । कैसा रहा हमारा उपाय?"

"ओह! कमाल! क्या ग़ज़ब की बुद्धि है! आप का उपाय तो बेजोड़ है!" सर्पदन्त ने फिर प्रशंसा की ।

"ठीक है, ठीक है! अब इस तरक़ीब को हमें अतिशीघ्र काम में लाना होगा । चलो, अभी से तैयारियाँ शुरू करो ।" वीरसिंह ने
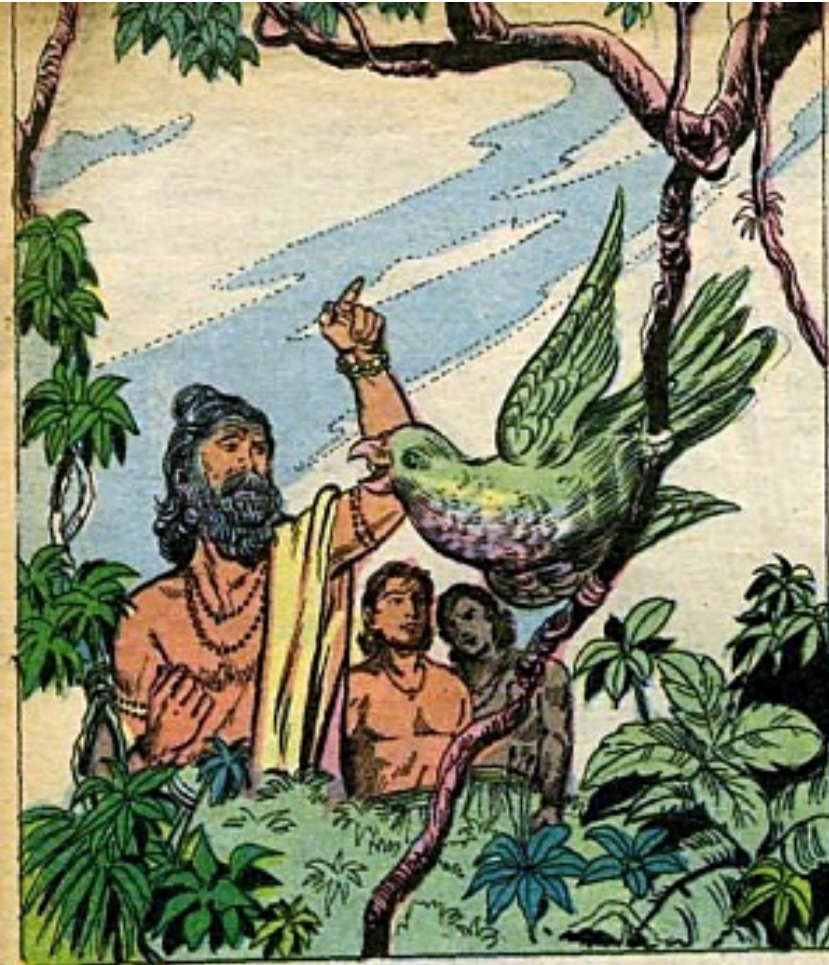
व्यग्रता से कहा ।

आखेट के लिये जाने की तैयारियाँ तुरन्त शुरू हुईं ।

दूसरे दिन वीरसिंह सैकड़ों सैनिकों को साथ लेकर सर्पदन्त के साथ जंगल के लिए निकल पड़ा । सुमेध राज्य के सरहद पर फैला जंगल काफी विशाल था । लेकिन पहले पहल जंगल के जिस भाग को वीरसिंह घेरने जा रहा था, वहीं जयानन्द मुनि का आश्रम था ।

वीरसिंह ने उस भाग के चारों ओर का अंदाज़ा लिया और कहा, ''आज मैं बाघ, भालू और भेड़िये जैसे खूँख्वार जानवारों को मारना चाहूँगा । तुम लोग डफली, तुरही आदि बजाते हुए जंगली जानवरों को हमारी ओर खदेड़ लाओ ।'' वीरसिंह की आज्ञा के मुताबिक डफ-तुरही बजाते हुए सैनिक बड़े उत्साह से जंगल में घुस पड़े ।

जयानन्द मुनि के शिष्य यह सब देखकर अपने गुरु के पास गये और उन्हों ने उसे वीरसिंह के हमले के बारे में सूचित किया । इसपर जयानन्द मुनि ने युवराज को कहीं छिप जाने की सलाह दी । फिर तोते से उसने कहा, ''मल्ली, तुम जाकर बाघ, भल्लूकी और हाथी को सावधान रहने की चेतावनी देकर आओ ।''

तोता तुरन्त उड़ गया ।

फिर भी भल्लूकी इस से पहले ही आफ़त में फँस गयी थी । अचानक सुनाई देनेवाली आवाज़ से घबराकर वह युवराज को खोजने निकली और उसकी सुरक्षा के ख़याल में पड़ी । वह खुद के बारे में सोचना भूल कर बेतहाशा इधर-उधर दौड़ने लगी ।

भल्लूकी को देखते ही वीरसिंह ने गरज कर सैनिकों को आज्ञा की, ''अरे, उस भालू को पकड़ो पहले, जाल में फँसा दो उसको ।''

पासवाले शिकारियों ने भल्लूकी पर जाल फेंक दिया । जब वह जाल में फँसी, तब तक कुछ सैनिक उसे घेर चुके थे । उस जाल से निकलने की उसने खूब कोशिश की । लेकिन कोई फ़ायदा नहीं रहा । उल्टे कुछ सैनिक कोड़े मारते हुए, उसे डराने लगे ।

उस दृश्य को देखकर वीरसिंह ठहाके मार मार कर हँसने लगा । वह कहने लगा, ''शाबाश! अच्छा तोहफ़ा मिला! हमें और खूँख्वार जानवरों को पकड़ना चाहिये ।''

RAZI

से चले जायें तो अच्छा रहेगा ।"

वीरसिंह ने मज़ाक के स्वर में कहा, "हुँ... एक राजा कोई परम्परा बनाए, तो आनेवाला दूसरा राजा अपनी मर्ज़ी से उसे तोड़ भी सकता है ।"

"अच्छा राजा अच्छी परंपराएँ कभी तोड़ेगा नहीं ।"मुनि ने कहा ।

"आख़िर तुम कहना क्या चाहते हो? यही न कि मैं एक अच्छा राजा नहीं हूँ?" मुनि को घूरते हुए वीरसिंह ने सवाल किया ।

"तुम अच्छे राजा हो या नहीं, यह तुम खुद को साबित करना होगा ।" मुनि ने कहा ।

"साबित करना? और किसके सामने? तुम्हारे? क्या तुम मेरे न्यायाधीश हो? कितने घमंडी हो तुम!" वीरसिंह हुँकार कर बोला ।

इतनी अवधि में जाल में फँसी भल्लूकी ने खूब कोशिश करके अपना एक पंजा बाहर निकाला और पास ही खड़े सैनिक के गाल को घायल कर दिया । सैनिक बेचारा ज़ोर से चीख उठा ।

चीख सुनकर उस ओर देखते हुए वीरसिंह ने आज्ञा की, "इस दुष्ट जानवर को तुरन्त मार डालो ।"

"वह जानवर दुष्ट नहीं है वीरसिंह! तुम लोग उस पर अत्याचार कर रहे हो, उसे सता रहे हो । इसी लिये उस के मन में तुम्हारे प्रति शत्रुभाव उत्पन्न हुआ है ।" मुनि जयानन्द बोल उठा ।

"क्या कहा? मैं यहाँ का राजा हूँ, मुझे नाम से पुकारने का साहस? कितने ढीठ और

और पास खड़े सर्पदन्त से हलके स्वर में कहा, "दुष्ट विद्रोहियों को भी इसी तरह पकड़कर बन्दी बनाना चाहिये ।"

"हाँ प्रभु, ज़रूर पकड़ना चाहिये ।" कहकर सर्पदन्त आगे बढ़ने लगा ।

लेकिन अचानक वहाँ एक आवाज़ सुनाई दी, "रुक जाइये!"

सब उस ओर देखने लगे । झाड़ी के पीछे से जयानन्द मुनि उनके सामने आया और कहने लगा, "कृपया मेरी बात सुनिये । सुमेध राज्य के राजा या शान्तिपुर के मन्त्री इस प्रान्त में पहले कभी नहीं आये थे । उनके कुलगुरु यहीं प्रशान्त जीवन यापन करते थे, इसलिये वे इस प्रान्त को पवित्र मानते थे । इसी परंपरा का गौरव रखकर, आप लोग यहाँ

बेअदब हो तुम! जैसे मैं तुम्हारे राज्य में आया हूँ, इस प्रकार मुझे आज्ञा दे रहे हो?" वीरसिंह ने होंठ भींचते हुए कहा ।

"बेटा, यह न तुम्हारा राज्य है और न मेरा ही– यह तो प्रकृति का राज्य है!" मुनि ने कहा ।

इसपर असीम क्रोध में आकर वीरसिंह चिल्लाया, "इस बूढ़े को पकड़कर बन्दी बना लो ।"

कुछ सैनिकों ने आगे खिसक कर मुनि को बन्दी बनाया । बस, उसी क्षण जंगल के अनेक पक्षियों ने तरह तरह की आवाज़ें कीं, जैसे पूरा जंगल रो रहा हो ।

दूसरे ही क्षण, झाड़ियों के पीछे से एक तीर चला आया और वीरसिंह के ठीक सामने ही ज़मीन में धँस गया । उसके साथ एक पत्र था, जिसमें लिखा हुआ था, "वीरसिंह! हम चाहते, तो पत्र लिखने के बदले, इसी बाण से तुम्हारी जान ले सकते थे । लेकिन ऐसा नीच काम हमें करना नहीं है । इज्ज़त के साथ भालू को छोड़कर अपना रास्ता नापो!"

वह चिट्ठी पढ़कर वीरसिंह क्रोध से काँप उठा । "इस तीर को छोड़ने वाले को तुरन्त पकड़ो । यहीं कहीं छिपा होगा वह!" कठोर स्वर में चीखकर उसने आज्ञा दी ।

सैनिक चारों ओर भागने लगे, लेकिन चिट्ठी में लिखी बात याद आते ही डर से वीरसिंह सर से पाँव तक काँप उठा । सचमुच अगर तीर अपने ऊपर चला आया तो क्या होगा! इस विचार से थरथर काँपते हुए

वीरसिंह ने अपने अंगरक्षकों से कहा, "हम इतनी दूर आये और हमें एक भालू और एक बूढ़ा ही मिल गया । इसी में खुश होकर हम राजधानी लौट पड़ेंगे । जिस दुष्ट ने तीर छोड़ा था, उसे हमारे सैनिक ज़रूर पकड़ लायेंगे ।" डरा हुआ वीरसिंह इतना कहकर पीछे मुड़ा ।

इस के थोड़े ही पल बाद सैनिकों का हाहाकार सुनायी दिया। डर से चीखते-चिल्लाते तितर-बितर होकर सब दौड़ने लगे ।

"हमें भी भाग जाना चाहिये महाराज! सभी जंगली जानवर एक साथ हम पर हमला करने चले आ रहे हैं ।" एक सैनिक ने भागते हुए, चिल्लाकर कहा ।

शेर दहाड़ने लगे, हाथी चिंघाडने लगे, सियार चिल्लाने लगे, साँप फुफकारने लगे। इस तरह जंगल के सारे जानवर क्रोध में आकर दौड़े-भागे, वीरसिंह के सैनिकों पर हमला करने आने लगे। वहाँ का सारा वातावरण भयानक रूप धारण कर चुका। एक बन्दर सीधे वीरसिंह पर ही कूद पड़ा! और उसके सिर से ताज उतार लेकर भाग गया। एक कौए ने सर्पदन्त के सिर से पगड़ी उठाकर चोंच में पकड़ ली और उसीके साथ उड़ गया।

इस तरह जंगल में चारों ओर हंगामा मच गया था। जंगल का हर जानवर गुस्से से पागल नज़र आने लगा। उन जानवरों ने वीरसिंह के लोगों पर हमला बोल दिया था। भयानक आवाज़ों से जंगल गूंज उठा।

इन आवाज़ों से घबराकर पेड़ों से बँधे घोड़े तुरन्त रस्सियाँ तोड़कर भाग निकले। लाचार होकर वीरसिंह और सर्पदन्ततो भल्लूकी और जयानन्द मुनि को वहीं छोड़ और जान हथेली पर लेकर भाग निकले। जंगली जनवरों से घायल होकर, खून टपकते कच्चे घावों के कारण पीड़ा से चीखते-कराहते सारे सैनिक गिरते-उठते बेतहाशा भागने लगे।

थोड़ी ही देर में वीरसिंह और उसके अनुचर किसी तरह जंगल से बाहर निकले और पास के एक मैदान में इकट्ठा हुए। फिर भी जंगली जानवर उनका पीछा छोड़े बिना, उन्हें खदेड़ते ही रहे। एक बाघ दहाड़ता हुआ आकर वीरसिंह पर कूद पड़ा। इससे घबराकर वीरसिंह चिल्लाता हुआ ज़मीन पर लुढ़क पड़ा और बेहोश हो गया।

"दोस्तो, बस, अब शान्त हो जाओ! वापस आओ।" एक मधुर-गंभीर स्वर सुनाई दिया और सारे जानवर पीछे मुड़कर उस तरफ़ देखने लगे।

जंगल और मैदान के बीच की एक छोटी सी पहाड़ी की चोटी पर खड़ा एक सुन्दर युवक आज्ञा दे रहा था। उसकी आज्ञा सुनकर मंत्रित जैसे सारे जानवर पीछे मुड़े और जंगल में चले गये। (क्रमशः)

भट्टलोल्लट की कथा

दृढ़निश्चयी राजा विक्रम फिर पेड़ के पास चल दिया। शाखा से शव उतारकर उसने अपने कंधेपर डाल लिया और हमेशा की तरह मौन होकर वह श्मशान की ओर चल पड़ा। तब लाश में मौजूद बेताल कहने लगा, "हे राजन्, आलीशान महल में रहनेवाले तुम को बेवक्त इस डरावनी जगह पर घूमते हुए देखता हूँ, तो मुझे भट्टलोल्लट की कहानी याद आती है, जिसने अपने ही लोगों को मौत के घाट उतारा था। मैं तुम्हें अब उसकी कहानी सुनाता हूँ, ताकि तुमको थकान महसूस न हो और ऐसा लगे कि वक्त भी जल्दी कट रहा है।" बेताल कहानी सुनाने लगा।

पुराने ज़माने में विन्ध्य के जंगलों में अनेक जंगली जातियों के लोग रहते थे। तीरंदाज़ी, तलवार चलाना और कुश्ती लड़ना आदि कलाओं में जो दूसरे सब को हरा पाएगा ऐसा आदमी अपनी जाति का नेता बनता था।

बैताल कथा
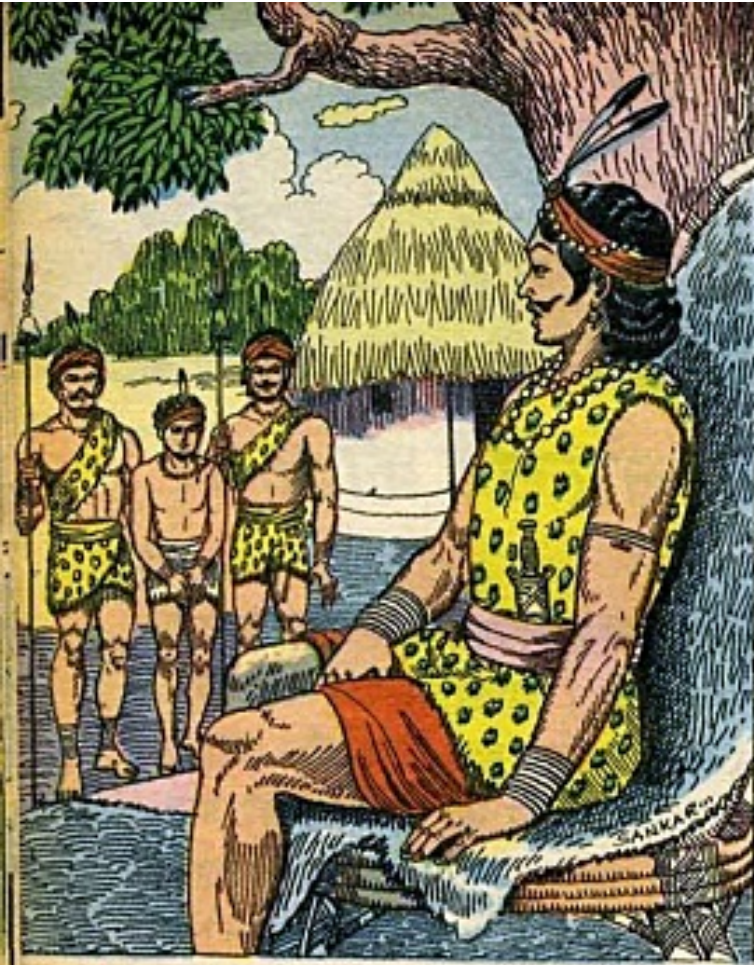
और फिर जाति के सभी लोग उसके नियंत्रण में रहते । लोग उसे अपना राजा सा मानते । वह जो आदेश देता, उसे लोग सर-आँखों पर कर लेते । एक बार ऐसी ही एक जंगली जाति का मुखिया काफी बूढ़ा होकर मर गया और भट्टलोल्लट उस जाति का मुखिया बन गया । इन जातियों के लोगों को अपने अपने आचार-व्यवहारों पर बड़ी श्रद्धा-भक्ति रहती थी । जाति के रीति-रिवाज़ों को हर कोई मानता था । अगर कोई अनुशासन के विरुद्ध बर्ताव करता तो उस को कठोर से कठोर दंड दिया जाता था । सभी अन्य जातियों की तरह भट्टलोल्लट की जाति के भी कुछ विधि-निषेध थे । उनमें से एक था–खरगोश नहीं खाना ।

एक बार भट्टलोल्लट की जाति के दो बुज़ुर्गों ने एक नौजवान को बन्दी बनाकर भट्टलोल्लट के सामने पेश किया और कहने लगे, "हमारी जाति का होकर भी इसने खरगोश को भुनकर खाया है ।हम ने इसे जंगल में रंगे हाथों पकड़ा है ।यह जवान हमारी जाति के लिए कलंक है । हमारी परंपरा के अनुसार जो नहीं करना चाहिए, उसे करके जाने क्या आनंद मिला उसे । आप इस से गुनाह कबूल करवा लीजिए और फिर इसे उचित दंड दें, ताकि आगे ऐसा करने की किसी की हिम्मत न हो ।"

भट्टलोल्लट ने उस युवक को देखा । वह दुबला-पतला और सूखा हुआ सा लगा । वह बिलकुल कमज़ोर दिखाई दिया । उसकी आँखें भी धँसी हुई थीं ।

"खरगोश का गोश्त खाना पाप होता है, यह तुम नहीं जानते?" भट्टलोल्लट ने उससे पूछा ।

नौजवान दुर्बल स्वर में जवाब देने लगा, "मैं दस दिन पहले आखेट के लिये उस जंगल में गया था । वहाँ मैं ने अपने तीर कमान खो दिये और भटक गया । भूख का मारा था,इसलिये खरगोश को पकड़कर खाना पड़ा ।"

"चाहे कुछ भी हो, तुम ने अक्षम्य पाप किया है ।" भट्टलोल्लट बोल उठा । फिर वह उन बुज़ुर्गों से कहने लगा, "अब हमारी जाति के लोगों को इस ओर सचेत करना होगा । अब तुम लोग इसे ले जाओ और

भालुओं वाले बियाबान में छोड़ आओ ।"

भट्टलोल्लट के लोग जहाँ रहते थे, उन पहाड़ों के पीछे वाले जंगली प्रान्त में एक और जंगली जाति के लोग रहते थे । उनके नेता का नाम था वेगमल्ल । भट्टलोल्लट के लोगों की जगह उसे बड़ी अच्छी लगती थी । वहाँ अनेक जड़ी-बूटियाँ मिलती थीं और शिकार करके बाघ-हाथी की खालें और हाथीदाँत भी उपलब्ध खूब किये जाते ।

वेगमल्ल ने सब तरह की तैयारियाँ की और एक दिन सूर्यास्त के समय भट्टलोल्लट पर हमला किया । लेकिन हर वक्त अपने लोगों की सुरक्षा के बारे में सावधान रहनेवाले भट्टलोल्लट ने बड़ी बहादुरी के साथ उसका सामना किया । और उसको जीत कर कैद कर लिया ।

अब वेगमल्ल लाचार था । नज़राने में भट्टलोल्लट को अनेक गायें और भेड़ें उसने दीं और वादा किया कि वह हमेशा भट्टलोल्लट के अधीन रहकर ज़रूरत के वक़्त उसकी मदद करेगा । इसके बाद भट्टलोल्लट ने वेगमल्ल को रिहा कर दिया ।

इस जीत से भट्टलोल्लट का हौसला बढ़ा । अपनी जाति के लोगों के साथ वेगमल्ल की जाति के लोगों को भी लेकर उसने और दूसरी जातियों पर भी हमले किये । इस के बाद उसने वैशाली के राजा को नज़राने में व्याघ्रचर्म, हाथी की खालें और हस्तिदन्त वगैरह भेजना बन्द किया ।

इसपर वैशाली का राजा क्रोधी हुआ और उसने जंगल में रहनेवाले भट्टलोल्लट पर हमला किया । राजा की सेना का बल अधिक था; फिर भी जंगल में रहनेवाले लोगों के युद्धव्यूह के बारे में नागर राजा को कुछ भी मालूम नहीं था । पेड़ों की आड़ में, और शिलाओं के पीछे छिपकर भट्टलोल्लट के वनवासी सैनिकों ने बरछे और विषैले बाणों का प्रयोग कर अनेक नागर सैनिकों को मार गिराया । इस प्रकार फटाफट मरनेवाले सैनिकों को देखकर बाकी सैनिक जान बचाकर भाग निकले । द्वंद्वयुद्ध में भट्टलोल्लट ने वैशाली-राजा को जान से मार डाला और खुद वैशाली का राजा बन गया ।

अब भट्टलोल्लट ने वनवासियों को भी राज्य के नागरिकों की तरह मानकर अनेक

है । इसे कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाय ।"

भट्टलोल्लट ने थोड़ी देर सोचा, फिर उस वनवासी कन्या का ब्याह नागर युवक के साथ अपने समक्ष ही करवा दिया । उसने इस बात की घोषणा भी करवायी कि जंगलियों और नागरिकों के बीच विवाह-सम्बन्ध निषिद्ध नहीं है । इसकी पुष्टि में उसने एक नया कानून भी बना दिया ।

इस कानून से जंगलियों में हलचल मची । कुछ जंगलियों ने इस बात का प्रचार किया कि यह कानून जंगलियों के आचार-व्यवहारों पर कुल्हाड़ी की मार जैसा है । इन नेताओं ने अपने लोगों को इकट्ठा करके विद्रोह किया और वे सब भट्टलोल्लट की राजधानी पर आक्रमण करने निकल पड़े । इन विद्रोहियों का नेता था सिंगारवेल, जो भट्टलोल्लट का चचेरा भाई था। राजधानी के बाहर भट्टलोल्लट ने अपनी सेना की मदद से उनका सामना किया ।

युद्ध शुरू होने से पहले भट्टलोल्लट के सेनाध्यक्ष ने उससे कहा, "महाराज, सामने खड़े शत्रु के सारे लोग अपनी जाति के हैं । इन का नेता तो स्वयं आप का ही चचेरा भाई है । स्वजातियों को मारना, क्या धर्म-विरुद्ध नहीं होगा? यदि सन्धि कर लें, तो...."

भट्टलोल्लट ने इसपर क्रोध से सेनाध्यक्ष की ओर देखा और अपने सैन्य को युद्ध के लिए ललकारा । प्रचण्ड क्रोधाग्नि के साथ वह सामने की सेना पर टूट पड़ा और उस ने सब को मार गिराया । इस तरह भट्टलोल्लट ने

अधिकार दिये । बहादुर जंगली नौजवानों को अपनी सेना में दाखिल किया । उनमें से कुछ साहसी जवानों को ऊँचे पद भी दिये । दरबार में अनेक बनवासी-प्रमुखों को विशेष पद मिले ।

एक बार जब भट्टलोल्लट भरी राजसभा में बैठा हुआ था, तब एक नागरिक को भट्टलोल्लट की जाति के बुज़ुर्गों ने बन्दी बनाकर उसके सामने पेश किया, और कहा, "राजन्, आप तो हमारी जाति के आचार-व्यवहारों से अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं । उनकी हिफ़ाज़त करना आप का कर्तव्य है । इस दुष्ट ने हमारी जाति की एक कन्या से प्यार किया और बगैर हमारी इजाज़त के उसे नगर ले जाने लगा । हम ने इसे पकड़ लिया

अपनी जाति के ही सभी लोगों का कत्ल किया, एक को भी नहीं छोड़ा ।

कहानी समाप्त कर बेताल ने राजा से कहा, "राजन्, एक जंगली आदमी ने भूख मिटाने के लिए खरगोश को भुनकर खाया, तब भट्टलोल्लट ने उसे भालुओं के प्रदेश में भेजकर मरवा दिया था । अब इसी आदमी ने स्वजाति के लोग जिसे दुराचार मानते थे, उसे कानूनी तौर पर बढ़ावा दिया और नगरियों व बनवासियों के बीच विवाह-संबन्धों को सही करार दिया । इस प्रयत्न में उसने अनेक स्वजातियों और रिश्तेदारों को भी मौत के घाट उतार दिया । मगर भट्टलोल्लट ने ऐसा क्यों किया? इस प्रश्न का उत्तर जानकर भी तुम न दोगे, तो तुम्हारा सिर फटकर टूकडे टुकडे हो जाएगा ।"

राजा विक्रम ने उस प्रश्न के जवाब में कहा, "आचार-व्यवहार और संप्रदाय, किसी जाति के लोगों तक ही सीमित होते हैं । इसीलिये भट्टलोल्लट ने खरगोश खानेवाले अपराधी को अपने जंगल के नियमों के आधार पर दण्ड दिया था । बाद में वह वैशाली का राजा बना । अब वह किसी एक विशिष्ट जाति का मुखिया नहीं रहा, इसलिये आचार और धर्म-विशेष से ऊपर उठकर न्याय करना अब भट्टलोल्लट का कर्तव्य बन गया । अपनी जाति के लोगों को खुश करने के लिये किसी नगरीय आदमी को दण्ड देना उचित नहीं था, इसलिये मानवतावादी बनकर उसने नागर युवक और बर्बर युवती की शादी करा दी । इस के परिणाम में उठे विद्रोह के जवाब में उसने अपनी ही जाति के लोगों का कत्ल किया । यह सब, अपने राज्य की सुरक्षा की दृष्टि से एक राजा के कर्तव्यपूर्ण दायित्व की पूर्ति ही कहलाएगा । उस ने जो कुछ किया, उचित ही किया है ।"

इस प्रकार जवाब देने पर राजा का मौन भंग हुआ, और बेताल लाश के साथ अदृश्य होकर पुनः उसी पेड़ पर जाकर डाल से लटकने लगा । (कल्पित)

(आधार: डॉ. टी. आर. प्रसाद)

भुलक्कड़

राजापुर गाँव में रंगनाथ नामक एक आदमी रहता था । उसकी याददाश्त बहुत ही कमज़ोर थी । कोई काम करने के लिये वह घर से निकलता, तो जल्दी ही वह काम भूल जाता । रोज़ ऐसा ही होता था । रामनाथ के इस भुलक्कड़ स्वभाव से उसकी पत्नी अक्सर खींज उठती थी ।

राजापुर से थोड़ी दूर में शांतिनगर नाम का शहर था। राजापुर के लोग अपनी छोटी-बड़ी ज़रूरत की चीज़ें इसी शहर से खरीद लाते थे । एक दिन पत्नी ने रंगनाथ से, शहर जा कर कुछ ज़रूरी सामान खरीद लाने को कहा ।

सिर खुजलाते हुए रंगनाथ बोला, "सुनो, तुम तो जानती ही हो कि मैं भुलक्कड़ आदमी हूँ । फिर एक साथ इतनी सारी चीज़ें मैं कैसे याद रख सकूँगा भला? तुम ऐसा करो, सारी चीज़ों के नाम एक परचे पर लिखकर दे दो मुझे! फिर मैं जो जो चीज़ खरीदूँगा, उस पर निशान लगाऊँगा । फिर तुम्हें जो चीज़ें चाहिए, सभी की सभी मिल जाएँगी । ठीक कहा न मैं ने?"

यह सुनकर उसकी पत्नी जानकी ने कहा, "वारे वाह! इतनी मुद्दत के बाद आप की ख़ोपड़ी में एक अच्छी तरक़ीब आयी । ऐसा तो पहले भी कर सकते थे । फिर तब यह कहाँ चरने गई थी?" फिर हँसते हुए आवश्यक चीज़ों का विवरण उसने एक परचे पर लिखकर रंगनाथ के हाथ में थमा दिया । रंगनाथ तुरन्त शान्तिनगर के लिये चल पड़ा । जाते जाते उस ने एक बार देख लिया कि पत्नी की दी हुई सूची का कागज़ उसकी जेब में सुरक्षित है । अगर वही भूल गया तो चीज़ें कैसे खरीदी जा सकेंगी?

रंगनाथ शाम को लौट आया । खाली हाथ आये अपने पति को देख, जानकी ने आश्चर्य से

शान्ता श्रीवास्तव

पूछा, "सारी चीज़ों के नाम तो मैंने परचे पर लिखे थे न? फिर अब खाली हाथ क्यों आये हो? परचा ले जाना ही भूल गये क्या? उस को तो आप ने खूब सँभलते हुए अपनी जेब में रख दिया था ।"

हँसते हुए रंगनाथ बोला, "नहीं ऐसी बात नहीं । परचा तो है ज़ेब में । लेकिन सामान के लिये रुपये जेब में रखना भूल गया । अब अगर पास में रुपये न हों तो तुम्हीं बतओ सामान कैसे खरीदूँ?"

"उफ! तो बेकार ही शहर में भटक कर आ गये? अब परचा और रुपये लेकर फिर कल शहर जाइये । आज का दिन तो बेकार रहा, कल ऐसा मत करना!" जानकी ने कहा ।

दूसरे दिन तड़के ही उठकर रंगनाथ शहर चला गया । मगर फिर शाम को वह खाली हाथ ही लौट पड़ा! उसे देख, झुँझलाते हुए जानकी ने पूछा, "मुझ से एक बात भी बोले बिना तड़के ही उठकर चले गये और फिर खाली हाथ लौट आये हो । अब की बार क्या हुआ? अगर मुझ से कह कर जाते, तो मैं एक बार देखती कि रुपये, पर्चा, थैली सब कुछ आप के साथ हैं ।"

मुँह लटकाये रंगनाथ ने कहा, "लगता है, समय ही अच्छा नहीं है । सामान लेने दूकान पर गया और जेब में हाथ डाला । तो क्या, परचा व रुपये भी जेब से गायब थे! शायद रास्ते में किसी जेबकतरे के हाथ रुपया-पैसा लग गया होगा! लेकिन जेब तो कहीं कटी नज़र नहीं आती । क्या कहना, बड़ा ही चालाक था वह चोर? जेब कतरी और ज़रा भी पता न चला ।"
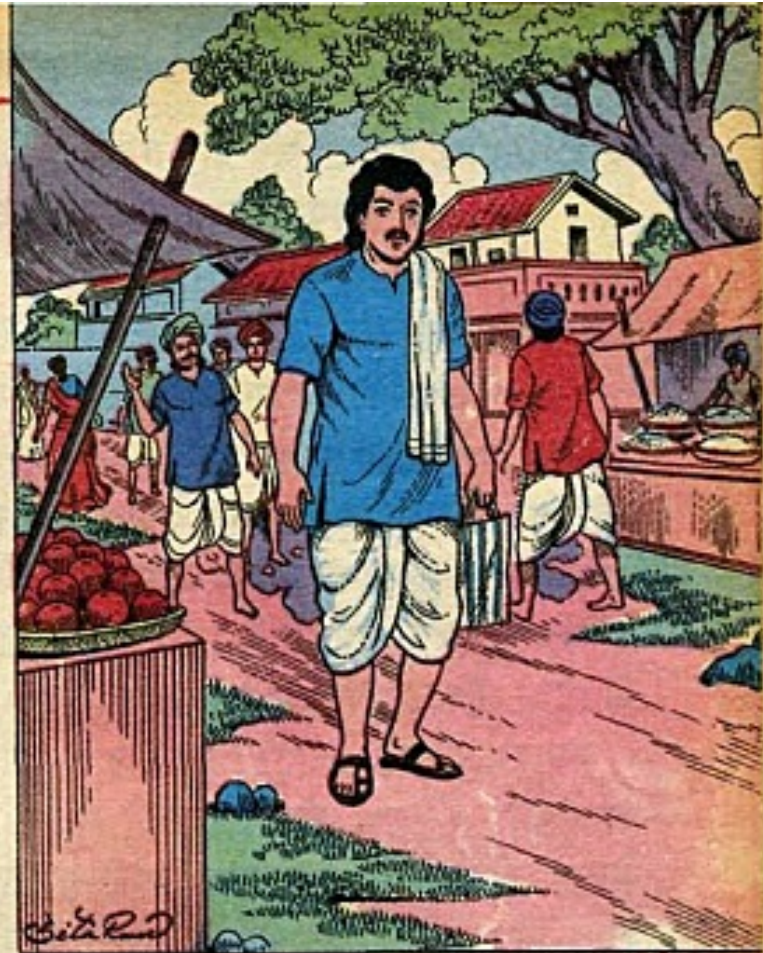
इस जवाब पर जानकी को हँसी आ गयी । उसने कहा, "आप का यह भुलक्कड़पन और दो जनम लेने पर भी शायद चला नहीं जाएगा!"

"और दो जन्मों की बात बाद में सोच लेंगे । इस जनम की सोचो पहले । इस भुलक्कड़पन से मैं परिवार के कामकाज कैसे सँभालूँ?" रंगनाथ ने दुखभरी आवाज़ में कहा ।

"बिलकुल मेरे ही मन की बात आप के मुँह से निकली । अच्छा, अब जेबकतरे की बात भूल जाइये और सोचिये कि दूसरी ही

कोई बात हुई हो? सोचिये तो! हो सकता है, आप को ही पता चलेगा कि कहाँ क्या गड़बड़ हुई। ज़रा ठंड़े दिमाग से सोचिएगा।" जानकी ने कहा।

रंगनाथ को लगा, कि जानकी के इस प्रकार पूछने में ज़रूर कोई मतलब है। उसके चेहरे को ध्यान से देखते हुए रंगनाथ ने कहा, "इस भुलक्कड़पन के कारण शायद मेरी सोचने की शक्ति भी घटती जा रही है। मेरे बदले तुम ही सोचो और मुझे बताओ कि बात क्या है?"

हँसकर जानकी ने कहा, "कल रात सोने से पहले आप ने परचा और पैसे अपने कुर्ते की जेब में रखे थे। लेकिन सुबह यहाँ से निकलते वक्त आप असली बात भूलकर दूसरा कुर्ता पहनकर चले गये। और शायद यह बात आप को बाद में भी याद नहीं आयी! आप के जाने के बाद बात मेरी समझ में आ गई। पर तब मैं क्या कर सकती भला?"

"अच्छा! यह रही बात! शहर से लौटते वक्त पैसे खोने की बात पर मुझे बहुत दुख हुआ, अपने आप पर बड़ा ग़ुस्सा भी हुआ। अब फिर कोई गलती न हो, इसलिये एक काम करेंगे।" रंगनाथ सुझाने लगा।

"क्या करेंगे, जल्दी बताइये तो!" जानकी ने पूछा।

"चीज़ों के नाम वाला परचा और पैसे इस जेब में रखो और कुर्ता उतारे बिना ही मैं सो जाऊँगा। कल इसी कुर्ते के साथ शहर चला जाऊँगा। कैसा रहा उपाय?" अपनी ही कल्पना पर खुश होकर रंगनाथ ने पूछा।

"उपाय तो अच्छा है; मगर अब इसकी कोई ज़रूरत नहीं।" जानकी ने कहा, "मैं ने सोचा कि आप शहर से सामान लाने के लिये बहुत ही तकलीफ़ उठा रहे हैं अपने भुलक्कड़पन के कारण! इसलिये पडोसी गणेश भैय्या से कहकर वे चीज़ें मैं ने मँगवा लीं। आज सबेरे आप के चले जाने के बाद, आप के कुर्ते की जेब से परचा व पैसा निकालकर मैं ने उसे दे दिया। अभी एक घण्टा पहले सारा सामान आ भी पहुँचा घर में। अब वह बात आप भूल जाइये।"

हमारा ज्ञान भंडार

वह कौन था ?

एक कवि किसी गीत की रचना में व्यस्त था । एक स्थान पर वह रुक गया । क्यों कि भगवान के बारे में एक पंक्ति लिखने के लिए उस की प्रतिभा उसे प्रेरित कर रही थी, पर वह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि लिखे या न लिखे । बड़ी देर तक उस ने चिंतन किया, पर वह किसी निर्णय पर नहीं पहुँच सका । उस ने कलम और ताल-पत्र नीचे रख दिया और वह नहाने के लिए तालाब पर गया । वापस आ कर देखा तो अपनी पत्नी को खाना खाते देख उसे आश्चर्य हुआ । क्यों कि यह उस की आदत न थी । वह हमेशा पति के भोजन के उपरान्त ही खाना खाती थी । अब उस को भी बड़ा आश्चर्य हुआ । उस ने पूछा – "यह क्या? थोड़ी देर पहले आप ने ही आ कर एक पंक्ति लिख दी और खाना खा कर चले गये न?"

कवि ने ताल-पत्र देखा । उस के मन में जो पंक्ति थी और जिस को उस ने नहीं लिखा था, वही उस को वहाँ लिखी मिली । वह समझ गया कि लिखनेवाला और कोई नहीं, स्वयं भगवान ही है । उसे परमानन्द हुआ! वह कौन था?

(पृष्ठ ३६ देखिए)

क्या आप जानते हैं?

१. भारत जब स्वतंत्र हुआ, उस समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष कौन थे?
२. किस राजा ने "गंगैकोंडा" की उपाधि प्राप्त की? और क्यों?
३. उस ने किस शहर की स्थापना की?
४. भारतीय गणराज्य के द्वारा सुयोग्य व्यक्तियों को कौनसी चार उपाधियाँ दी जाती हैं?
५. प्राचीन भारत के महान् रेखागणितज्ञ कौन थे?

(पृष्ठ ३६ देखिए)

सिंधु, भूमि और नदी भी!
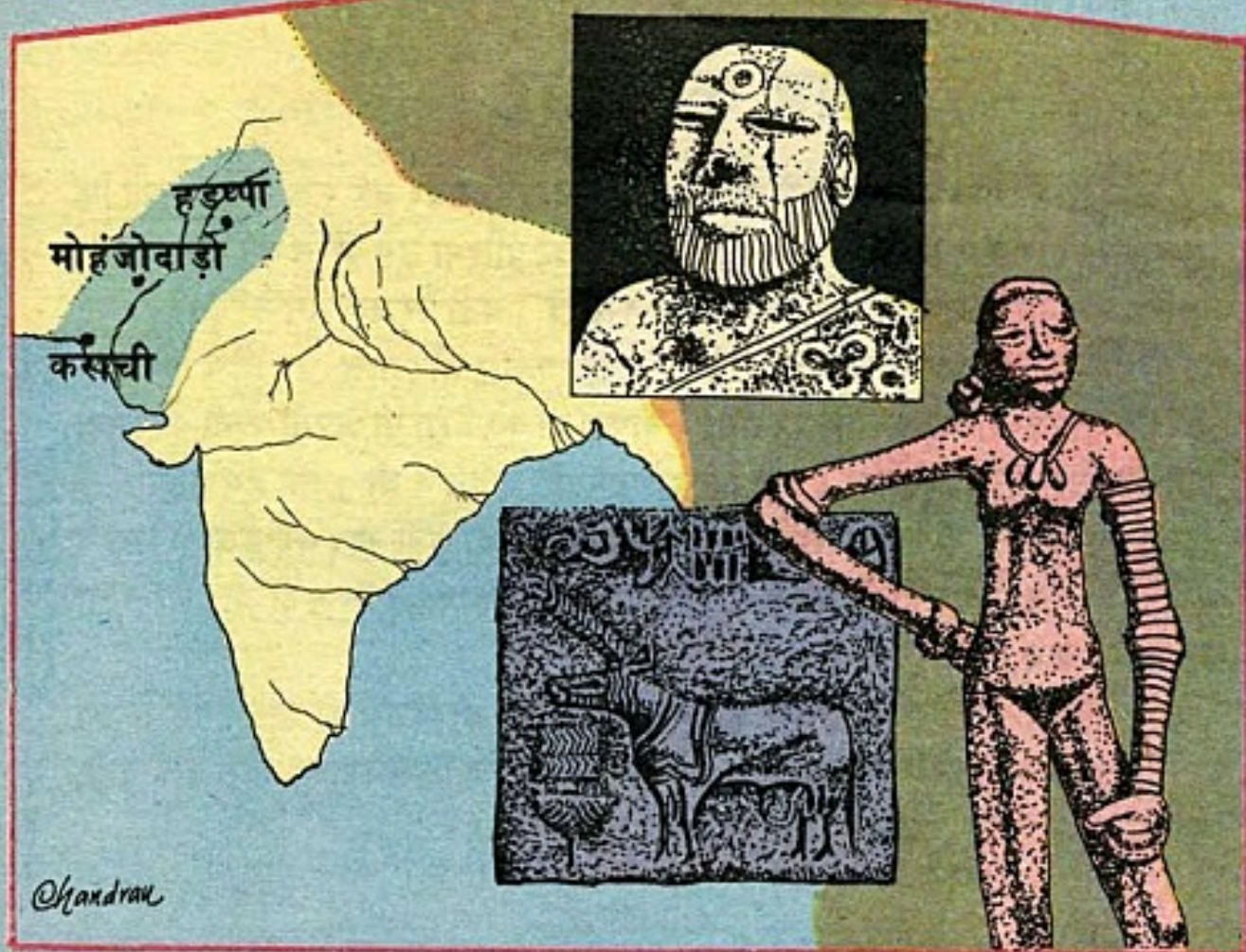
सभी राष्ट्र आज जिसे भारत नाम से पहचानते हैं, उस का 'इंडिया' नाम सिंधु नदी के अंग्रेज़ी नामकरण इंडस के आधार पर बना है । सिंधु कश्मीर और पंजाब के भूभाग में बहती हुई अरब सागर से मिलती है । उस के प्रवाह में मिलनेवाली बड़ी बड़ी नदियाँ हैं– सोहन, झेलम, चिनाब, रावी, बियास और सतलज । इन नदियों के कारण आसपास का भूभाग खूब उपजाऊ बन गया है ।

सिंधु नदी की घाटी के आसपास के विशाल भू-प्रदेश का नाम है सिंध । हज़ारों साल पहले इस घाटी में एक महान् सभ्यता का विकास हुआ । मोहन-जो-दाड़ो और हड़प्पा के बारे में किस ने नहीं सुना है? इधर कुछ वर्षों में

पुरातत्व विभाग द्वारा जो अनुसंधान-कार्य संपन्न हुआ है, उस में पाँच हज़ार साल पहले यहाँ बसे संपन्न शहरों के अवशेष अब मिल गये हैं । इन शहरों में चौड़े रास्ते, विशाल जनता-भवन और उद्यान थे। तांबा, कांसा, चांदी, सीसा और सोने की बनी बेहतरीन कलाकारी के नमूने यहाँ के अवशेषों में मिले हैं ।

सिंधु नदी ने कई महान् साम्राज्यों का उदय और अस्त देखा है । भारत के प्राचीन साहित्य में इस भूमि की सुसंपन्नता और सौंदर्य का अच्छा वर्णन पाया जाता है । सुप्रसिद्ध सिकंदर ने इस भूमि पर आक्रमण किया था । सिंध के अंतिम महाराजा दहिर ने सन् ७११ ई. में मुहम्मद कासिम के विरुद्ध बड़ी शूरता के साथ युद्ध किया और उसी में अपने प्राण गँवाये ।

दुर्भाग्य से १९४७ में भारत विभाजन हुआ और सिंध, पाकिस्तान का एक हिस्सा बन गया । सिंध का प्रमुख शहर है कराची ।

चन्दामामा की ख़बरें

लंबे क़दवाला आदमी

इस वर्ष के जुलाई मास के रिपोर्ट के अनुसार बंगला देश का परिमल बर्मन (२६ साल) आज दुनिया का सब से लंबा आदमी है । उस की लंबाई २.४५ मीटर या ८ फीट और २ इंच है । जब ढाका के अस्पताल में उसे दाखिल कराया गया, तब उस के लिए एक ख़ास चारपाई बनानी पड़ी ।

नया प्रतिमान

गिनीज बुक ऑफ रेकॉर्डस् में भोपाल के ब्रिजेश श्रीवास्तव ने (२२ साल) एक नया प्रतिमान स्थापित किया । इस साल १५ जुलाई को उस ने एक सूती धागे को १३ नं. की सुई के छेद में ६,०६२ बार पिरोया ।

कुछ सवाल साहित्य के

१. मृत्यु की देवता ने मृत्यु का रहस्य जिस लड़के को बता दिया, उस नचिकेत का उल्लेख किस प्राचीन ग्रंथ में मिलता है?

२. किस नोबेल पुरस्कार पानेवाली महिला ने अपने सारे काव्य की रचना मातृत्व, बालक, प्रकृति और परमेश्वर को ले कर ही की थी?

३. वह किस देश की रहनेवाली थी?

४. उस को नोबल पुरस्कार कब मिला?

५. भारत में कितनी मातृ-भाषाएँ, जिन में बोलियाँ भी संमिलित हों—प्रचलित हैं?

उत्तर

वह कौन था?

गीत-गोविन्द का रचयिता जयदेव ।

क्या आप जानते हैं?

१. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ।

२. चोल राजा राजेन्द्र (ईसा ग्यारहवीं सदी) ने गंगा राजाओं पर पाई विजय के उपलक्ष्य में यह उपाधि ग्रहण की ।

३. वर्तमान तमिलनाडू में गंगैकोंडा चोलापुरम् ।

४. सब से ऊँची उपाधि है भारत-रत्न । बाद में क्रमशः पद्म-विभूषण, पद्म-भूषण और पद्मश्री ।

५. आर्यभट्ट (छठी शताब्दी), वराह मिहिर (छठी शताब्दी), ब्रह्मगुप्त (सातवीं शताब्दी), महावीराचार्य (नवीं शताब्दी) और भास्कराचार्य (बारहवीं शताब्दी) ।

साहित्य

१. ऋग्वेद में ।

२. गॅब्रिएला मिस्ट्रल (१८८९-१९५७) ।

३. चिली ।

४. १९४५ ।

५. १९७१ की जन गणना के अनसार ७०० भाषाएँ ।
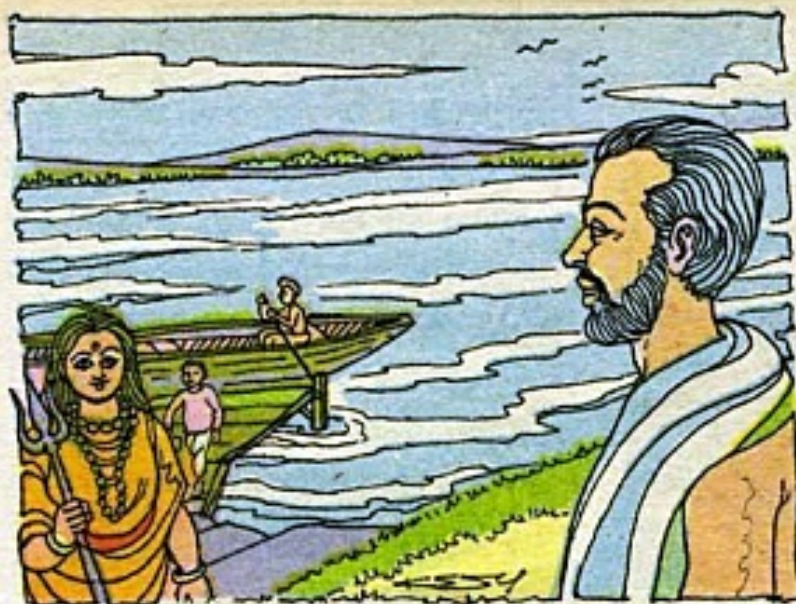
श्रीरामकृष्ण परमहंस

(४)

एक दिन एक नाव नदी तट पर आकर रुकी। गदाधर ने देखा कि नाव में से एक अजीब स्त्री उतर रही है। उस के हाथ में त्रिशूल और चेहरे पर अध्यात्मिक साधना से प्राप्त अद्‌भुत प्रकाश था। वह स्त्री तंत्र-विद्या में प्रवीण भैरवी थी।

गदाधर ने भैरवी को अपनी माँ के समान माना और उसे सादर निमंत्रण दिया। भैरवी ने जान लिया कि गदाधर एक महापुरुष है। उस ने गदाधर को तंत्र-शास्त्र के रहस्य समझा दिए।

भैरवी ने एक दिन अपनी आराध्य देवी के सामने नैवेद्य रख कर आँखें मूँद लीं और ध्यान में बैठ गई। तब गदाधर वहाँ आया और नैवेद्य खाने लगा। भैरवी ने आँखें खोल कर यह दृश्य देखा, पर उस ने क्रोध नहीं किया। उसे परम संतोष हुआ, क्यों कि नैवेद्य खानेवाले गदाधर में उसे आराध्य देवी के दर्शन हो चुके थे।

माथुर बाबा द्वारा आयोजित पंडितों की एक सभा में भैरवी ने अच्छा भाषण दिया । इस भाषण में उस ने कहा कि श्रुतियों और पुराणों में अवतार पुरुषों के जिन लक्षणों का उल्लेख है, वे सभी गदाधर में हैं । इस लिए गदाधर एक अवतार पुरुष है । उस की बातों का किसी ने खंडन नहीं किया ।

एक बार एक रामभक्त साधु दक्षिणेश्वर आया । वह अपने साथ बालक श्रीराम की एक मूर्ति लाया था । साधु उस मूर्ति से बातें करता था, जैसे कि वह कोई जानदार, सचमुच जीता-जागता बच्चा हो । बड़े उत्साह के साथ गदाधर यह सब बड़े ध्यान से देखता रहता ।

एक दिन गदाधर जब वहाँ से अपने कमरे में लौट आया, तो उस ने पाया कि वह सुंदर बालक राम अपने पीछे ही चला आ रहा है । गदाधर ने जान लिया कि बालक राम की मूर्ति की आत्मा ही यों बालक बन कर चली आई है, जिसे वह साधु 'रामलला' कह कर पुकारता था । इस पर गदाधर को महान हर्ष हुआ ।
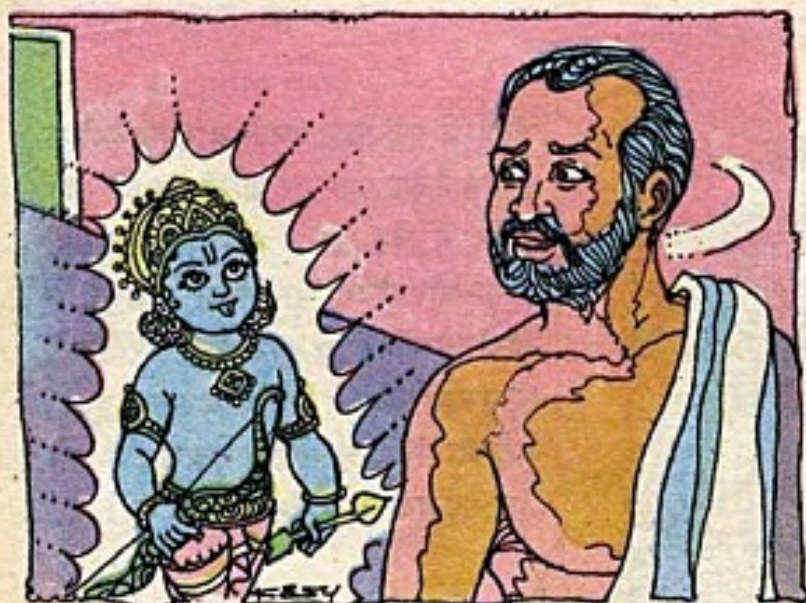
रामलाला एक पल भर के लिए भी गदाधर से अलग नहीं रहता था । फल खिलाने और साथ खेलने के लिए रामलाला नित्य गदाधर से कहता । वह हठ करता, मचलता रहता । अगर साधु उसे ढूँढ़ते हुए आता तो वह कहीं छिप जाता । साधु ने उसे बहुत डाँटा, पर उस में कोई परिवर्तन नहीं आया ।
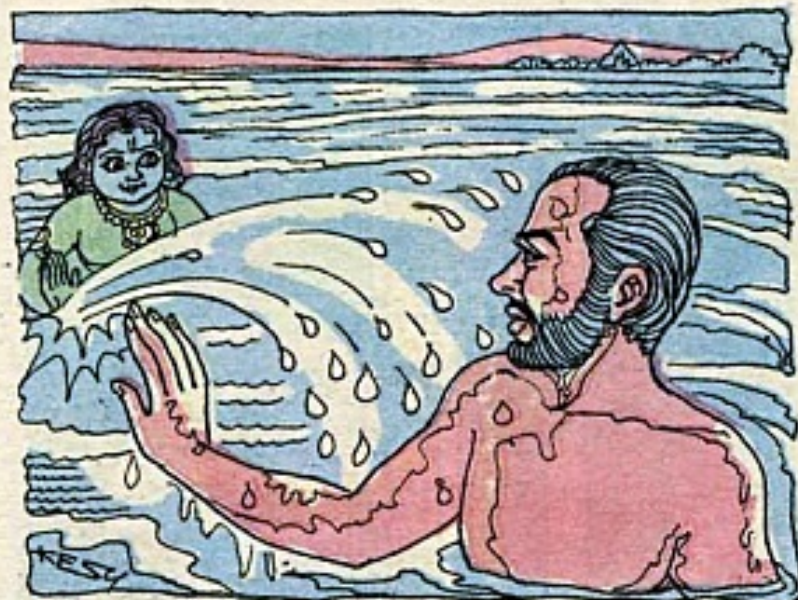
गदाधर जब नहाने के लिए नदी की ओर जाता तो रामलाला भी उस के पीछे चला जाता था । वह भी नदी में देर तक नहाता, समझाने-बुझाने पर भी वह जल्दी तट पर नहीं आता । गदाधर को कभी-कभी रामलाला पर बहुत गुस्सा आता, लेकिन बाद में गदाधर को अपने गुस्से पर पछतावा होता ।

एक बार साधु ने कहा– "बेटा, रामलाला को तुम्हें छोड़ कर आना पसंद नहीं है । अब यह मूर्ति तुम ही अपने पास रख लो ।" यों कह कर साधु ने वह छोटी मूर्ति गदाधर के सुपुर्द की, फिर वह वहाँ से चला गया ।

उन दिनों एक प्रसिद्ध योगी था तोतापुरी। एक दिन वह नदी के किनारे घूम रहा था तो वहाँ एकान्त में बैठे गदाधर पर उस की नज़र पड़ी। उसे देखते योगी के मन में आया कि वेदांतों का जो अर्थ वह जानता है उसे बताने के लिए गदाधर एक सुयोग्य व्यक्ति है। योगी मन-ही-मन बहुत खुश हुआ।

तोतापुरी ने गदाधर के पास आ कर पूछा– "बेटा, तुम योग-विद्या का अध्ययन करोगे? या वेदान्त के मार्ग का अनुसरण करोगे?" गदाधर ने झट कहा– "मैं अपनी माँ के आदेश का पालन करूँगा।" फिर वह सीधे कालीमाता के मंदिर में पहुँचा और काली माँ की प्रार्थना की। फिर गदाधर ने तोतापुरी के पास आ कर कहा– "गुरुदेव, मैं तैयार हूँ।"

एक दिन सुबह तोतापुरी ने पवित्र अग्नि जलाई और स्वयं मंत्रों का उच्चारण करते हुए, गदाधर से उन मंत्रों का उच्चारण करवाया। सब कार्यक्रम पूरा होने पर तोतापुरी ने गदाधर को संन्यास प्रदान किया। फिर उस ने गदाधर को नया नाम दिया– 'रामकृष्ण'!

अनपढ़ लोग

बात पुरानी है। किसी गाँव में एक ग़रीब किसान रहता था। उसके पास एक बूढ़ी गाय थी। बस वही उसकी धन-संपत्ति, सब-कुछ थी।

एक दिन गाय ज़मींदार के खेत की मेंड़ पर चर रही थी। तब उसकी नज़र खेत के हरे-भरे पौधों पर पड़ी। उन्हें खाने की इच्छा से वह अन्दर घुसने का रास्ता ढूँढ़ने लगी। खेत के चारों ओर लगी बाड़ एक जगह टूटी हुई थी। उस रास्ते अन्दर घुसकर गाय पौधे खाने लगी, इतने में ज़मींदार के आदमी वहाँ दौड़ आये। हाथ की मोटी लाठी से एक ने गाय के शरीर पर ज़ोरदार प्रहार किया। उस एक प्रहार से ही वह बेचारी बूढ़ी, कमज़ोर गाय मर गयी।

गरीब किसान और उसकी पत्नी अपनी अकेली गाय की मौत पर बहुत दुखी हुए। किसान सीधे ज़मींदार के पास पहुँचा और उसने अपनी गाय का हरज़ाना माँगा।

"अच्छा! तुम्हें हरज़ाना चाहिये?" कहकर ज़मींदार ने अपने नौकरों से कहकर किसान को दस कोड़े लगवाये। बेचारा चीखता-चिल्लाता रहा। पर वहाँ वाले किसी ने उसकी मदद न की। ज़मींदार से बेचारे सभी डरते थे।

किसान घर लौट आया और उसने कराहते हुए अपने पर जो कुछ गुज़रा, वह सब पत्नी से कह दिया।

"ज़मींदार ने हमें न्याय नहीं दिया तो अब राजा के पास फ़रियाद ले जाना ही हमारे लिये एक मात्र मार्ग बचा है। राजा धर्मप्रिय है, वह ज़रूर हमें न्याय दिलाएगा।" किसान की पत्नी ने कहा।

लेकिन फ़रियाद कैसे करें? दोनों बिलकुल अनपढ़ थे—एकदम काला अक्षर भैंस बराबर! दोनों ने एक उपाय सोच लिया।

२५ साल पुरानी चन्दामामा की कहानी

लकड़ी का एक छोटा तख़्ता था उनके पास । किसान ने उस पर कोयले से एक चित्र बनाया । उसने चित्र में अपनी झोंपडी खींची, पास में ज़मींदार की इमारत दिखायी । फिर बाड़ से घिरा खेत का चित्र बनाया, जिस में एक जगह बाड़ टूटी हुई दिखाई दे रही थी । फिर उस में वह जगह भी दिखायी थी जहाँ गाय मरी पड़ी हुई । उसे दस कोड़े मारे गये थे, यह दिखाने के लिये पास में उसने दस छोटी छोटी रेखाएँ खींच दीं ।

फ़रियाद का वह तख़्ता अपनी पीठ पर बाँधकर किसान राजधानी के लिये निकल पड़ा । सफ़र करते करते वह एक जंगल में पहुँचा । वहाँ एक शिकारी ने किसान को देखकर पूछा, ''कहाँ जा रहे हो भाई?''

''राजा से मिलकर एक फ़रियाद करनी है । मेरी पीठ पर लदा तख़्ता ही वह फ़रियाद है ।'' किसान ने जवाब दिया ।

''किसके बारे में है फ़रियाद?'' शिकारी ने पूछा ।

''क्या बताऊँ भैय्या? हीरे जैसी मेरी गाय को उन लोगों ने मार डाला ।'' कहते हुए किसान एक जगह बैठ गया । शिकारी को उसने अपने पास बिठाया और उसे तख़्ते पर खींचे चित्र दिखाये, उनका मतलब समझा दिया और वह सब कुछ बता दिया जो उस पर गुज़रा था ।

किसान की बातें सुनकर शिकारी ने कहा, ''अच्छी रही तुम्हारी फ़रियाद! राजा इसे देख लेगा तो तुम्हें न्याय ज़रूर मिलेगा ।'' और शिकारी अपने रास्ते चला गया ।

किसान नहीं जानता था कि वह शिकारी
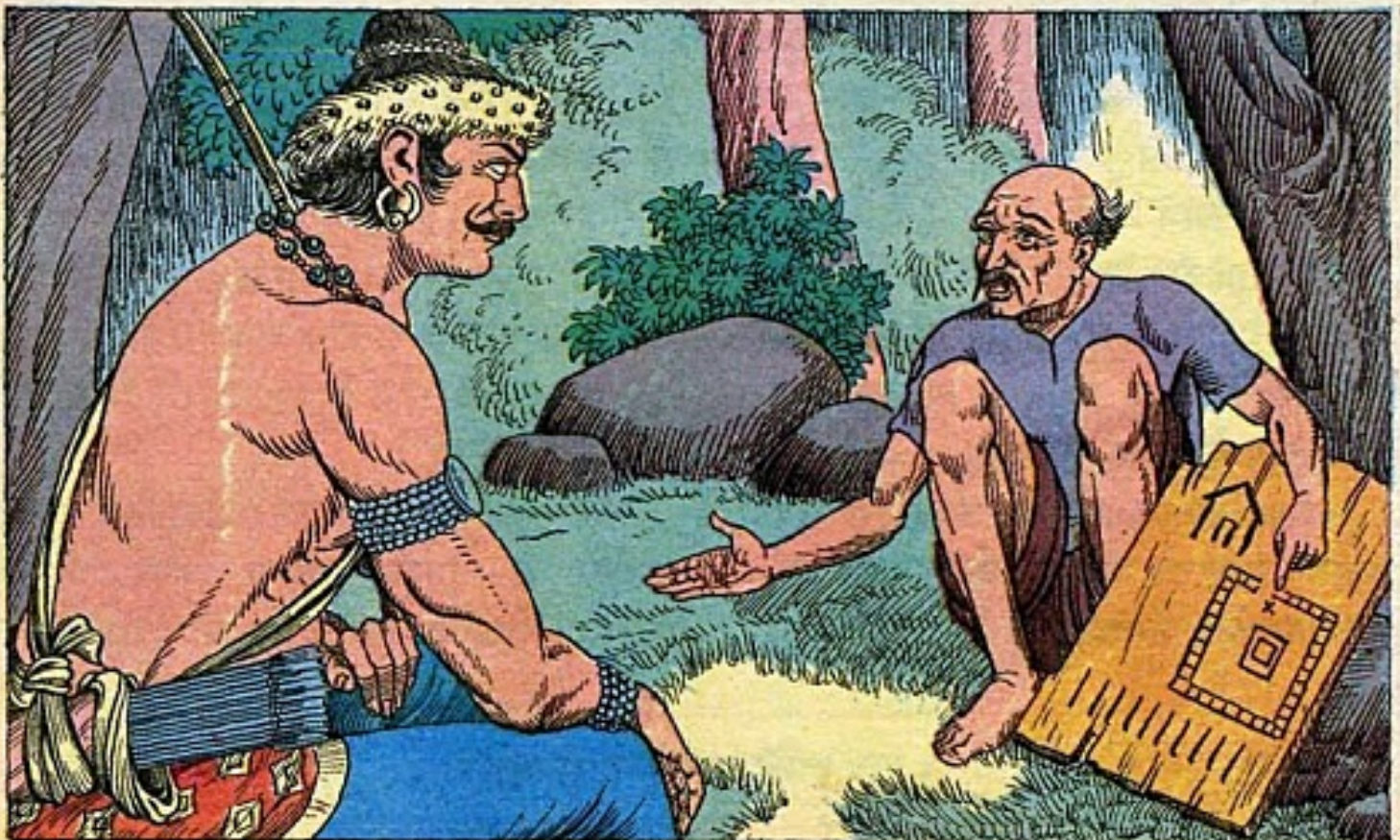
ही असल में राजा था ।

जंगल पार करके किसान राजधानी पहुँचा । राजभवन के पास उसे अन्दर जाने की अनुमति मिली । एक विशाल दालान पार कर वह एक चौपाल जैसी बैठक में पहुँचा; जहाँ राजा और उसके बारह मन्त्री बैठे हुए थे । राजा अब शाही पोशाक में था, इसलिये किसान उसे पहचान न पाया । किसान ने फ़रियादवाला तख़्ता पास बैठे मन्त्री को दिखाया । "यह मेरी फ़रियाद है । सारी बातें उसी में हैं ।" उसने कहा । तख़्ता देखकर मन्त्री ने पूछा, "यह कैसी फ़रियाद? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता!" कहकर उसने तख़्ता दूसरे मन्त्री की ओर बढ़ाया । उसने भी देखकर और आगे बढ़ाया । इस प्रकार सभी मन्त्रियों ने तख़्ता देखा, कुछ समझ न सका ।

"लगता है यह कोई बेवकूफ़ है । बाहर कर दो इसे ।" एक मन्त्री ने एक सेवक को आज्ञा दी ।

मगर राजा ने बीच में दख़ल देकर उस मन्त्री को चुप कराया और तख़्ता अपने हाथ में लिया । झोंपड़ी के चित्र पर उँगली रखकर राजा ने पूछा, "यही है न तुम्हारी झोंपडी?"

"हाँ प्रभु!" किसान ने कहा ।

"यह ज़मींदार की इमारत है न?" राजा ने फिर पूछा ।

"हाँ सरकार, ज़रा भी शक नहीं!" किसान ख़ुशी से बोला ।

"इस खेत की बाड़ यहीं टूट गयी है न?" राजा ने पूछा ।

"बेशक, वहीं सरकार!" किसान का दिल बल्ले उछलने लगा ।
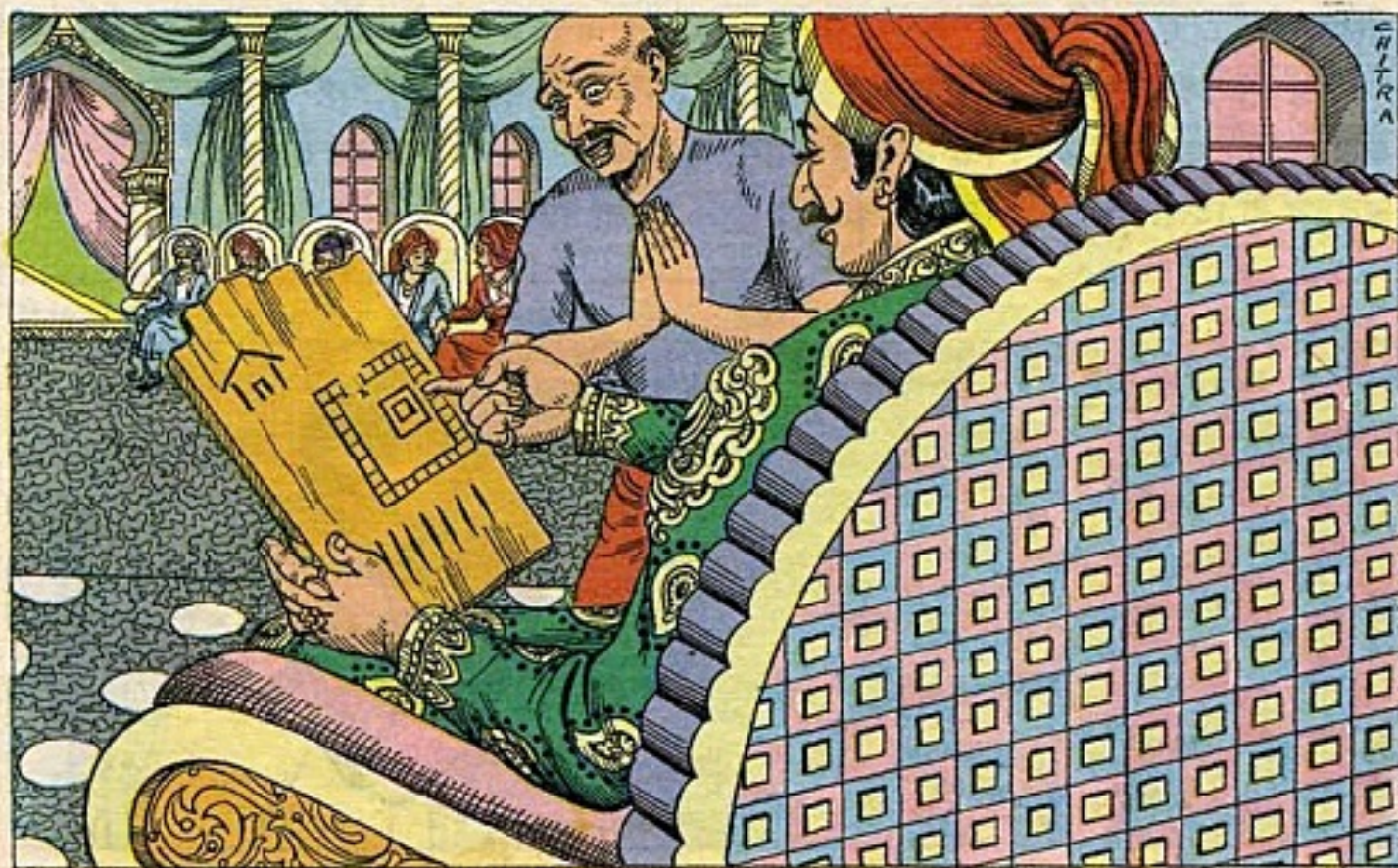
"इसी में से होकर तुम्हारी गाय ज़मींदार के खेत में पहुँची और उसके आदमियों के हाथों मारी गयी । ठीक है?" राजाने पूछा ।

"उफ्, महाराज! क्या पूछते हैं आप भी वह दुखड़ा?" कहकर किसान बेचारा रोने लगा ।

"और यहाँ की ये दस लकीरें — जमींदार के नौकर द्वारा तुम्हें मिले दस कोड़े होंगे! सही है न?" राजा ने पूछा ।

राजा की ये बातें सुन, किसान को महा-संतोष मिला । उसने राजा से कहा, "प्रभु! आप की बुद्धिमानी ही असली बुद्धिमानी है । ये आप के सारे लोग जो यहाँ बैठे हैं, बेकार हैं । इनकी खोपड़ियाँ तो बिलकुल खाली हैं!"

इस बात पर सारे मन्त्री ठहाका मार कर हँसने लगे ।

"अच्छा, अब तुम अपने गाँव चले जाओ और अपनी पत्नी से कहो कि मैं तुम्हें न्याय अवश्य ही दिला दूँगा ।" राजा ने कहा ।

राजा को नमस्कार करके किसान वहाँ से अपने गाँव लौट आया । उस के पीछे ही राजा का आदेश ज़मींदार को मिला ।

ज़मींदार खुद किसान की झोंपड़ी में आया, जो कुछ हुआ - उस के लिए क्षमा माँगी । फिर राजा की आज्ञा के अनुसार किसान को एक अच्छा घर बनवा दिया । उस में मवेशीखाना भी बनवाया गया । किसान को सात दुधारू गायें दी गईं । किसान के नाम पर साठ एकड़ बंजर भूमि लिखा दी गई । किसान ने यह सब हरजाना ही समझा और राजा के फ़ैसले की खूब तारीफ़ की ।

किसान और उस की पत्नी अब बहुत खुश हो गये । राजा की धर्म-प्रियता और उस की तीक्ष्ण बुद्धि की प्रशंसा करते हुए किसान कहता — "राजा तो स्वयं बुद्धिमान है! फिर उन अनपढ़ लोगों को अच्छा वेतन दे कर नौकरी में क्यों रखा, यह कुछ समझ में नहीं आता!" अपना आश्चर्य वह जहाँ-तहाँ प्रकट करता रहा ।

श्रीराम ने जब सुग्रीव से रावण का पता पूछा, तब आँसू न रोक पाते हुए सुग्रीव ने दुखी स्वर में कहा, "हे राम, मैं नहीं जानता कि रावण कहाँ रहता है । फिर भी मैं कसम खाकर कहता हूँ, कि वह रावण कहीं भी रहे, मैं उसे खोजकर पकड़ लूँगा और सीतादेवी को वापस लाने के लिए भरसक प्रयत्न करूँगा । तुम आश्वस्त रहो । मैं भी पत्नी को खो चुका, एक अभागा हूँ । फिर भी मैं ने धैर्य नहीं छोड़ा है । हम दोनों समदुःखी हैं । मैं तुम्हारी पूरी मदद करूँगा । रावण को ढूंढ़ निकालना मेरे लिए कोई मुश्किल काम नहीं है । हाँ, थोड़ा समय लगेगा अवश्य । तुम्हें धीरज से काम लेना होगा ।"

जब सुग्रीव राम को इस प्रकार सान्त्वना देने लगा, तो आँसुओं से भीगे अपने चेहरे को पोंछते हुए सुग्रीव से वह बोलने लगा, "मित्र, तुम एक सच्चे मित्र की भूमिका निभा रहे हो । मेरी इस दुरवस्था में तुम जैसे मित्र को पाना, मेरे लिये भाग्य की बात है । तुम ज़रूर रावण का पता लगाने की कोशिश में रहो, और पता करो कि सीता को उसने कहाँ रखा है । तुम्हें अगर किसी बात में मेरी मदद की ज़रूरत हो, तो बेशक बता दो । सन्देह मत करो कि मैं तुम्हारा काम कर पाऊँगा या नहीं । यह बात सच मानो कि मैं वाली का वध करके ही रहूँगा । आज तक मैं कभी झूठ नहीं बोला हूँ, और न आगे भी कभी बोलूँगा । मेरी बात पर विश्वास करो । मैं जानता हूँ कि वाली बहुत बलशाली है । फिर भी मेरे लिए उसका वध करना कोई कठिन काम नहीं है । सीता-स्वयंवर के समय शिवजी के धनुष् को

महान पराक्रमी लोग उठा भी नहीं पाये थे । मैं ने उस धनुष् को लीलया उठाया था । इस लिये वाली के बारे में तुम बिलकुल चिंता मत करो । मैं यह काम बड़ी आसानी से करूँगा ।"

राम के मुँह से आश्वासन सुनकर सुग्रीव और उसके मंत्री बहुत खुश हुए । सुग्रीव राम से कहने लगा, "हे मित्र, मेरे भाई ने मेरे साथ घोर अन्याय किया है । उसने मेरी पत्नी का भी अपहरण किया । मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं क्या करूँ । महान् बलशाली वाली ने मुझे राज्यभ्रष्ट किया । इतना ही नहीं, उसने मुझे जान से मारने का भी अनेक बार प्रयत्न किया है । मुझे मारने के लिये उसने जिन जिन वानरों को यहाँ भेजा था, उन सब का मैं ने अन्त कर दिया । अपने सगे भाई के ख़तरे से ही मैं डरा सहमा रहता हूँ और इसी से सिर छिपाकर ज़िन्दगी गुज़ार रहा हूँ । इसी कारण मैं खुद तुम्हारे पास नहीं आ सका । हनुमान आदि मेरे साथी मेरे सहायक बने रहे । वे हर दम मेरी रक्षा में लगे रहते हैं । जहाँ भी जाऊँ, वे हर दम मेरे साथ ही रहते हैं । मगर इस तरह जान के ख़तरे से डरा-सहमा मैं और कितने दिन मरता-मरता जिऊँ? जब तक वाली का अन्त नहीं होता, मुझे राहत नहीं मिलेगी ।अभी तुम से आश्वासन पाकर मुझे संतोष हो रहा है । फिर भी एक शंका मेरे मन में है अवश्य । वाली का वध करना उतना सरल काम नहीं है, जैसा तुम समझते हो । उसके बल को अभी तक तुम ने आजमाया नहीं है । फिर भी तुम्हारा आत्मविश्वास प्रशंसनीय है । तुम्हारे प्रति मेरे मन में अविश्वास नहीं है । फिर भी निश्चित रूप से मैं यह बात जानता कि तुम एक महान् उत्तरदायित्व को स्वीकार कर रहे हो ।"

इन बातों पर हँसते हुए राम ने कहा, "मैं एक ही तीर से वाली को मार गिरा सकता । जिस क्षण वह मुझे दिखाई देगा, उसी क्षण मैं उसे मौत के घाट उतारूँगा । इस बात में ज़रा भी सन्देह नहीं कि हम दोनों समदुःखी हैं । तुम्हारे दुख का अन्त मैं शीघ्र ही करूँगा । आश्वस्त हो जाओ मेरे मित्र! मेरे बाणों का सामर्थ्य अभी तक तुम ने देखा नहीं है । देखते तो तुम्हारे मन में जो शंका हो रही है,

वह कभी न होती । वाली ने तुम को बहुत सताया है, इस लिए तुम्हारा भय स्वाभाविक है । मैं कहता हूँ कि तुम वाली के बारे में चिन्ता मत करो । मैं उस का अंत करता, अब तुम रावण की खोज का काम प्रारंभ करो ।"

उस समय सुग्रीव ने वाली की ताक़त के बारे में कहा, "वाली तड़के ही उठकर घर से निकलता है और सूर्योदय के पूर्व ही चारों दिशाओं के सागरों में स्नान कर, सन्ध्या वन्दन भी करता है । पर्वत-शिखरों पर चढ़कर, वह बड़ी बड़ी शिलाओं को गेंद की तरह हवा में फेंक कर, उछाल कर फिर पकड़ता है, जंगल के बड़े बड़े पेड़ों को तोड़कर अपना बल आजमाता रहता है । हज़ार हाथियों का बल रखनेवाले दुंदुभी राक्षस का भी उसने वध कर दिया ।मैं ने वाली के सारे पराक्रम अपनी आंखों से देखे हैं । मैं जानता हूँ कि उसके साथ युद्ध करना कैसा कठिन काम है । अगर तुम उसका वध कर सकोगे तो मुझे अतीव संतोष होगा ।"

दुंदुभी भैंसे के आकार का एक राक्षस था । मदान्ध होकर एक बार उसने समुद्र के पास जाकर उसे अपने साथ द्वन्द्व-युद्ध के लिए ललकारा ।

तब सागर ने उसके साथ लड़ने की अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए उसे हिमवन्त के पास जाने को सुझाया ।

दुन्दुभी ने सोचा, कि सागर अपने साथ लड़ने से डरता है । वह खुशी खुशी हिमालय के पास गया! हाथी के आकार की बड़ी बड़ी

शिलाओं को अपने सींगों से उठाकर दूर फेंकते हुए गरजकर उसने हिमवान को युद्ध का आह्वान किया ।

उसे देख हिमवन्त ने एक पहाड़ की चोटी पर खडे होकर कहा, "दुंदुभि, मुझे युद्ध का नाम लेकर क्यों सताना चाहते हो? मैं युद्ध के लिये लायक नहीं हूँ । यहाँ अनेक ऋषि-मुनि तप कर रहे हैं-यह रणभूमि नहीं प्रशान्त तपोभूमि है ।"

इस पर बहुत क्रोधित होकर दुन्दुभि ने कहा, "तुम खुद यदि युद्ध करना नहीं चाहते हो, तो मुझे यह बता दो कि मुझ से कौन युद्ध करेगा? मैं कुछ ही क्षणों में उसे मारकर अपनी ताक़त का परिचय दूँगा ।"

"यदि तुम्हें युद्ध ही करना है तो

किष्किन्धापति वाली के पास जाओ । उसे हराना तुम्हें मुमकिन नहीं होगा ।'' हिमवान ने कहा ।

दुन्दुभि वहाँ से सीधे किष्किन्धा के द्वार पर आया, दहाड़ मार कर चिल्लाने लगा । वहाँ के पेड़ों को उखाड़ने लगा । खुरों से ज़मीन कुरेदने लगा और नगरद्वार को ही अपने सींगों से गिराने की कोशिश में लग गया । यह सारा हो-हल्ला सुनकर स्त्रियों को साथ लेकर वाली अन्तःपुर से बाहर निकला । दुन्दुभि को देखकर उसने कहा, ''अरे दुन्दुभि, मैं तो तुम्हें जानता हूँ । शोर क्यों मचा रहे हो? क्या तुम ज़िन्दा रहना नहीं चाहते?''

यह सुनकर दुन्दुभि आग-बबूला हुआ, और बोला, ''स्त्रियों के सामने सिर्फ डींग मारने से कोई फ़ायदा नहीं होगा । मैं तुम्हें कल सुबह तक की अवधि देता हूँ । इस बीच तुम अपनी जो भी ज़िम्मेदारियाँ हो, उन्हें पूरा करो । अपने रिश्तेदारों से आख़िरी बार मिल लो, अपनी नगरी का एक बार ठीक से दर्शन करो । अपनी जगह किसी और को राजा बना दो । बाद में मैं तुम्हारे पास आऊँगा, तुम्हारे मद-दर्प को अपने खुरों से रौंदने के लिये ।''

इस पर वाली ग़ुस्से से बेकाबू हो गया । स्त्रियों को अंतःपुर में भेजकर उसने देवेन्द्र द्वारा प्राप्त कांचनमाला पहन ली और वह दुन्दुभि पर टूट पड़ा । उसके सींगों को पकड़ कर उसे ज़मीन पर पटाते हुए वाली दहाड़ने लगा । दुन्दुभि के कानों से खून निकल आया ।

इस प्रकार वे दोनों काफी देर तक लड़ते रहे । मुष्टियुद्ध भी काफी लम्बे समय तक चलता रहा । घूँसेबाजी के बाद पत्थरों और पेड़ों की सहायता से भी लड़े । धीरे-धीरे दुन्दुभि की शक्ति क्षीण होती रही और वाली की बढ़ती रही । वाली ने अब दुन्दुभि को उठाकर जमीन पर पटका और इससे वह मर गया । इसके बाद दुन्दुभि के उस मृत शरीर को वाली ने उठाया खूब घुमाया और दूर फेंक दिया । मुँह से खून उगलता हुआ दुन्दुभि का शरीर मतंग मुनि के आश्रम के ऊपर से होकर, एक योजन की दूरी पर जा गिरा । उस वेग से बीच में आए आश्रम प्रान्त के अनेक पेड़ धराशायी हो गये ।

आश्रम में खून के धब्बे देखकर महामुनि मतंग को बड़ा क्रोध आया। उनको मालूम हुआ कि इसका कारण वाली है। तब उन्होंने वाली को शाप दिया कि वाली अगर अपने आश्रम से एक योजन के घेरे के अन्दर कदम रखेगा, तो वह तुरन्त मर जाएगा। इतना ही नहीं मुनि ने वाली के सेवकों को भी अपना वन छोड़कर चले जाने को कहा। उन्हें शाप था, कि जो भी वानर एक दिन में अपने आश्रम के वनप्रदेश से बाहर नहीं चला जएगा, वह शिला में बदल जाएगा।"

अपने पास लौट आये सेवकों को देखकर वाली ने पूछा, "तुम सब इस तरह भागे-भागे क्यों यहाँ आ रहे हो? कहीं वानरों पर कोई संकट तो नहीं टूट पड़ा है न?" तब उन सेवकों ने मतंग मुनि के शाप की वार्ता, वाली को सुनाई। वाली ने जाकर मतंग ऋषि की शाप से मुक्त करने के लिये प्रार्थना की, मगर ऋषि ने नहीं माना। उस दिन से वाली ने उस पर्वत की ओर देखना तक बन्द किया। यह शाप मुसीबत के वक्त सुग्रीव के काम आया और सुग्रीव निडर होकर ऋष्यमूक पर रहने लगा।

सुग्रीव ने वाली के बारे में यह समाचार सुना दिया और दुन्दुभि का अस्थिपंजर बना मृतदेह दिखाकर कहा, "ये सात बड़े बड़े सालवृक्ष जो यहाँ खड़े हैं इन में से किसी भी वृक्ष के तने को चीरते हुए अपना तीर चलाने की ताक़त वाली में है। ऐसे बलशाली व्यक्ति को तुम युद्ध में कैसे हरा पाओगे?"

इस पर लक्ष्मण ने हँसते हुए कहा, "राम अवश्य वाली को मार सकेगा यह बात सिद्ध करने के लिये राम को क्या करना चाहिये, यह तो बताओ।"

"राम भी अपने बाण को ऐसे चलाएँ कि वह सालवृक्ष के बीच से होकर निकल जाये और उसी तीर से दुन्दुभि का पार्थिव शरीर भी उठकर दो सौ बाँह की दूरी पर जा गिरे, तभी मैं विश्वास करूँगा कि राम ज़रूर वाली को मार सकेगा।" सुग्रीव ने कहा।

फिर उसने राम से मुख़ातिब होकर कहा, "हे राम! वाली बड़ा बलशाली है। अभी तक उसने कभी पराजय नहीं पायी है। वाली का बल मैं जानता हूँ, लेकिन तुम्हारा बल नहीं जानता। इसलिये डर की वजह से मैं यह सब

कह रहा हूँ । तुम्हें डराने का कदापि मेरा विचार नहीं है ।"

राम ने इसपर मन्दहास के साथ कहा, "मैं भी अपना पराक्रम दिखाऊँगा, ताकि तुम्हें मेरी शक्ति पर विश्वास हो जाय ।" फिर राम ने अपने पैर के अँगूठे से दुन्दुभि का शरीर उठाकर ऐसे फेंका, कि वह दस योजन की दूरी पर जा गिरा ।

यह देखकर सुग्रीव ने कहा, "हे राम! यह मृत शरीर अब सूखकर हल्का हो गया है । दुन्दुभि से लड़कर थक जाने के बावजूद वाली ने उसके ताज़ा और भारी-भरकम शरीर को इतनी दूर फेंका था । इसलिये तुम्हारे और वाली के बल के बारे में मेरा सन्देह अभी दूर नहीं हो पाया है । तुम इनमें से एक साल वृक्ष के बीच से होकर अपना बाण चलाकर दिखाओ, तभी तुम्हारी शक्ति का अन्दाज़ा मैं लगा सकूँगा ।"

सुग्रीव को अपनी शक्ति पर विश्वास हो, इस लिये राम ने एक बाण उठाकर एक साल वृक्ष के तने पर निशाना लगाकर छोड़ दिया । वह बाण उस साल वृक्ष के तने को चीर कर शेष छहों वृक्षों के तनों में से होकर उनको चीरता गया और उनके पार रहे एक पहाड़ को भी भेदकर ज़मीन में जा धँसा । यह देखकर हैरानी से सुग्रीव राम की ओर ताकता रहा । उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था । हाथ जोड़कर राम के सामने साष्टांग प्रणाम करते हुए सुग्रीव ने कहा, "हे राम! तुम इन्द्रादि देवताओं को भी हरा सकोगे! इस में अब ज़रा भी शक नहीं कि तुम वाली का वध कर सकोगे । तुम्हारी सहायता पाकर मैं सचमुच धन्य हो चुका हूँ ।"

इस पर राम ने सुग्रीव को गले लगा लिया । फिर लक्ष्मण से कुछ बात करके वह सुग्रीव से बोला, "सुग्रीव, हम अभी किष्किन्धा जाने के लिये निकलेंगे । तुम पहले जाओ और वाली को द्वन्द्व के लिये ललकारो ।"

राम की सलाह पर सुग्रीव आगे चल दिया । उससे ज़रा पीछे राम-लक्ष्मण और सुग्रीव के अनुचर भी किष्किन्धा पहुँचे । नगर के बाहर के वन में पहुँचकर वृक्षों के पीछे वे छिप गये ।

सुग्रीव ज़ोर ज़ोर से दहाड़ते हुए वाली को
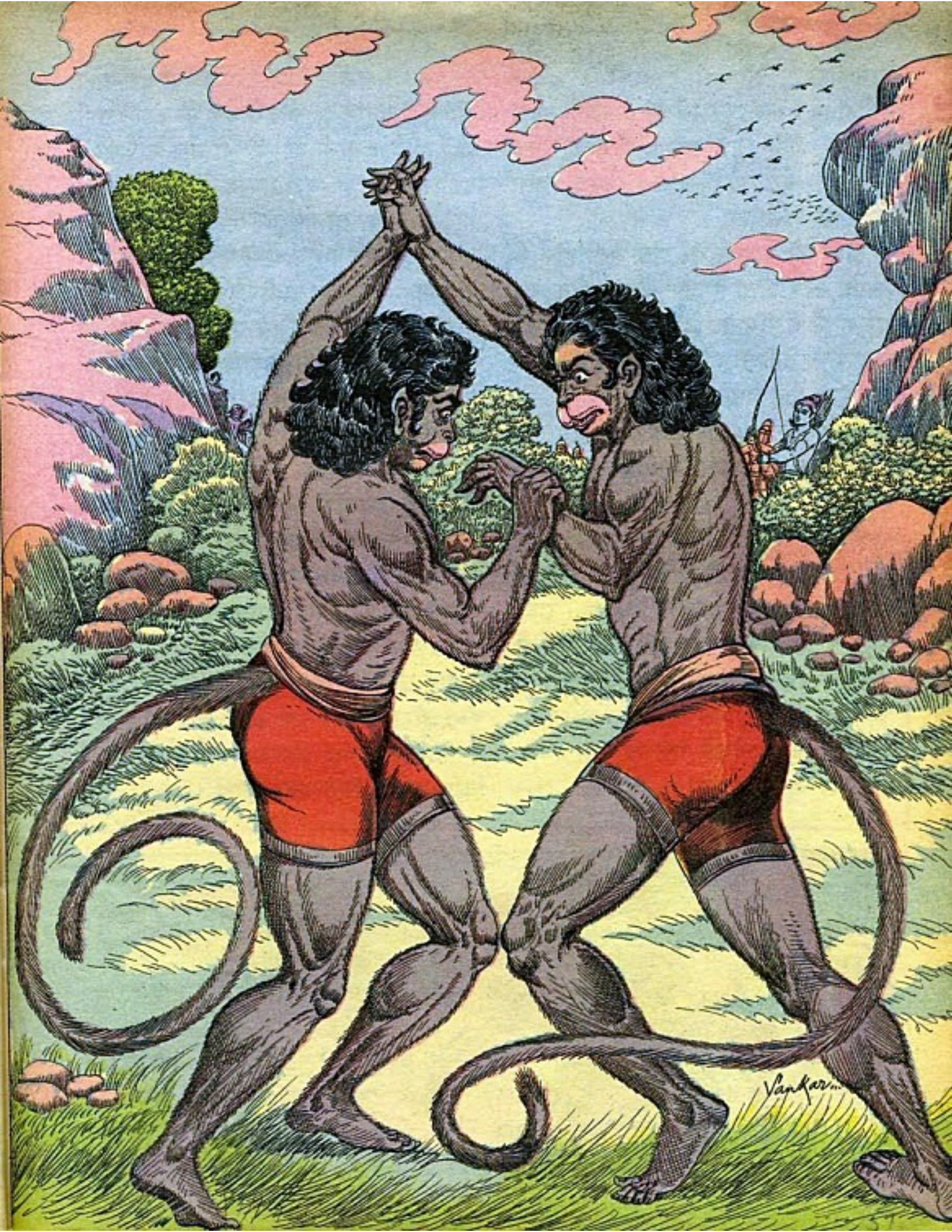
ललकारने लगा। उसकी आवाज़ पहचानकर वाली गुस्से से अन्त:पुर के बाहर आया। दोनों भिड़ गये। दोनों के बीच घमासान युद्ध होने लगा। उनके बीच मुष्टियुद्ध शुरू हुआ।

दोनों की शक्लसूरत एक जैसी होने के कारण कौन वाली है और कौन सुग्रीव, यह पहचानने में राम को दिक्कत हुई, और वह बाण चला नहीं सका। इस बीच सुग्रीव हार कर भाग जाने लगा।

वाली ने उसे मतंग मुनि के आश्रम तक खदेड़ दिया और कहा, "बच निकला, कायर कहीं का!"

हनुमान और लक्ष्मण को साथ लेकर सुग्रीव के पीछे राम भी वहाँ पहुँचा। राम को देखकर सिर झुकाकर सुग्रीव ने कहा, "राम, अपने पराक्रम का प्रमाण देकर तुम ने मुझे वाली से लड़ने के लिये भेजा और वाली के हाथों जब मुझ पर मौत के आघात होने लगे, तब तुम चुपचाप देखते रहे! क्या तुम ने यह जो किया, अच्छा किया?"

तब राम ने दुखी स्वर में कहा, "हे सुग्रीव! जो कुछ आज हुआ, उस से मुझे भी बड़ा दुख हो रहा है। वाली को मैं क्यों मार न पाया इसका कारण है, मुझे तुम दोनों भाइयों की शक्ल-सूरत, बोलना वगैरह सब बिलकुल एक जैसा लगा। तुम दोनों में अंतर पहचान न पाया। गलती से वाली को छोड़ तुम्हीं पर तीर चलाता तो? इसलिये चुप रहना पड़ा। तुम्हें अभयदान देनेवाला मैं ही हूँ और भ्रम में पड़ कर तुम्हारी ही जान ले लूँ, तो इससे बड़ा पाप और कोई न होगा। अब मुझपर बिना सन्देह किये फिर चले जाओ और वाली से युद्ध शुरू करो। तुम्हें मैं पहचान लूँ, इसलिये कुछ चिन्ह तुम्हें धारण करना होगा। एक ही तीर से मैं वाली का वध कर दूँगा। लक्ष्मण! सुग्रीव के गले में यह गजपुष्पी माला डाल दो, ताकि मैं इसे ठीक तरह से पहचान सकूँ।"

राम की बातों से सुग्रीव को पूरा विश्वास हुआ और गजपुष्पी लता की माला अपने गले में पहनकर वह फिर वाली से लड़ने किष्किन्धा के लिये रवाना हुआ।

अभिलाषा

बात पुरानी है । सुबोध नामक गुरु के पास वत्सल नामक एक शिष्य रहता था । उसका विद्याभ्यास तो पूरा हो चुका था, मगर गुरु की सेवा करते हुए उसके पास ही रहना उसे पसन्द था । वत्सल की गुरुभक्ति पर सुबोध प्रसन्न था । गुरुकुल के दस शिष्यों को पढ़ाने का काम गुरु ने वत्सल को सौंपा । गुरु की प्रशंसा पाने की इच्छा से बड़ी श्रद्धा के साथ वत्सल ने उन दस शिष्यों को पढ़ाया और बहुत ही कम अवधि में उन्हें अपने समान बनाया । बाकी शिष्यों की पढ़ाई उस समय मन्द गति से चल रही थी, इसलिये उन शिष्यों ने भी गुरु सुबोध के पास जाकर प्रार्थना की कि गुरु उन्हें भी वत्सल के हाथ ही सौंप दें ।

इसपर सुबोध ने हँसकर कहा, "पुत्रों, वत्सल अभी पढ़ाने में नया है । इसलिए तुम में से तेज़ छात्रों को चुनकर ही मैं ने उन्हें उसके पास भेजा था । तुम उन शिष्यों जितने तेज़ नहीं हो, इसलिए तो पढ़ाई में पीछे पड़ रहे हो । बात वाकई ऐसा नहीं है कि वत्सल मुझसे भी बेहतर गुरु हो । मेरे पास अब तक जिन विद्यार्थियों ने विद्या पाई, उनमें केवल कमल ही मुझसे बेहतर गुरु बन सका है । वह अब विद्यासागर के दरबार में है ।"

यह बात सुबोध के दूसरे शिष्यों के मार्फत वत्सल तक पहुँची । सुनकर वत्सल बहुत दुखी हुआ और गुरु के पास जाकर बोला, "आचार्यदेव, शिष्य के बेहतर गुणों पर गुरु को गर्व करना चाहिये, ईर्ष्या के चपेट में नहीं आना चाहिए । आप हमेशा मेरे लिये महान हैं, जो भी विद्या मैं ने हासिल की, वह आप द्वारा प्राप्त भिक्षा ही मैं समझता हूँ । मैं अगर शिष्यों को आप से बेहतर ढँग से पढ़ाऊँ तो आप मेरी प्रशंसा करेंगे, ऐसा ही मैं ने सोचा था । ऐसा कभी मन में भी नहीं आया कि

सुषमा शर्मा

आप मेरी छोटी-मोटी शक्ति की यूँ दिल्लगी करेंगे ।"

इसपर बड़ी गम्भीरता से गुरु सुबोध ने कहा, "देखो वत्सल, एक बार कमल के मामले में भी ऐसा ही हुआ था, मगर उसने मुझे तुम्हारी तरह घमंडी कहकर मेरी निन्दा नहीं की । उसने मुझ से प्रार्थना की, कि मैं उसे उसकी भूलें बताता रहूँ ताकि वह मेरे समान बन पाए । तुम्हारी महानता का निर्णय, तुम्हारे गुरु की हैसियत से मुझे बताना होगा, न कि तुम खुद को । तुम मुझे ईर्ष्यालु समझते हो, यह तुम्हारा गर्व है । गर्व तो अज्ञान का लक्षण होता है । और तो और, सच्चे अर्थों में जो ज्ञानी होता है, वही श्रेष्ठ गुरु हो सकता है ।"

इस पर वत्सल सुबोध के पैरों पर गिर कर रुँधे स्वर में कहने लगा, "गुरुदेव! मेरे अज्ञान के लिये मुझे माफ कीजिए । ऐसी भूल मैं फिर कभी नहीं करूँगा । मैं चाहता हूँ मुझे ऐसी कीर्ति मिले कि आप के शिष्यों में मुझे से बढ़कर महान् कोई न हो । कहिए, मैं क्या करूँ जिस से मुझे ऐसा नाम मिल जाए ।"

गुरु सुबोध ने वत्सल को उठाते हुए कहा, "पुत्र, तुमने ऐसा कोई अक्षम्य अपराध तो नहीं किया है । गर्व की थोड़ी सी बात छोड़ दें, तो तुम में सब अच्छा ही अच्छा है । मेहनत करके महान् बनने की इच्छा सिर्फ भले लोगों में ही होती है । मेरे प्रिय शिष्य कमल की भी यही इच्छा रहती थी । तब मैं ने उसे मुक्तपुर के तीन अलग अलग पेशेवरों को पढ़ाने का काम सौंपा और काम पूरा करने के लिये छह
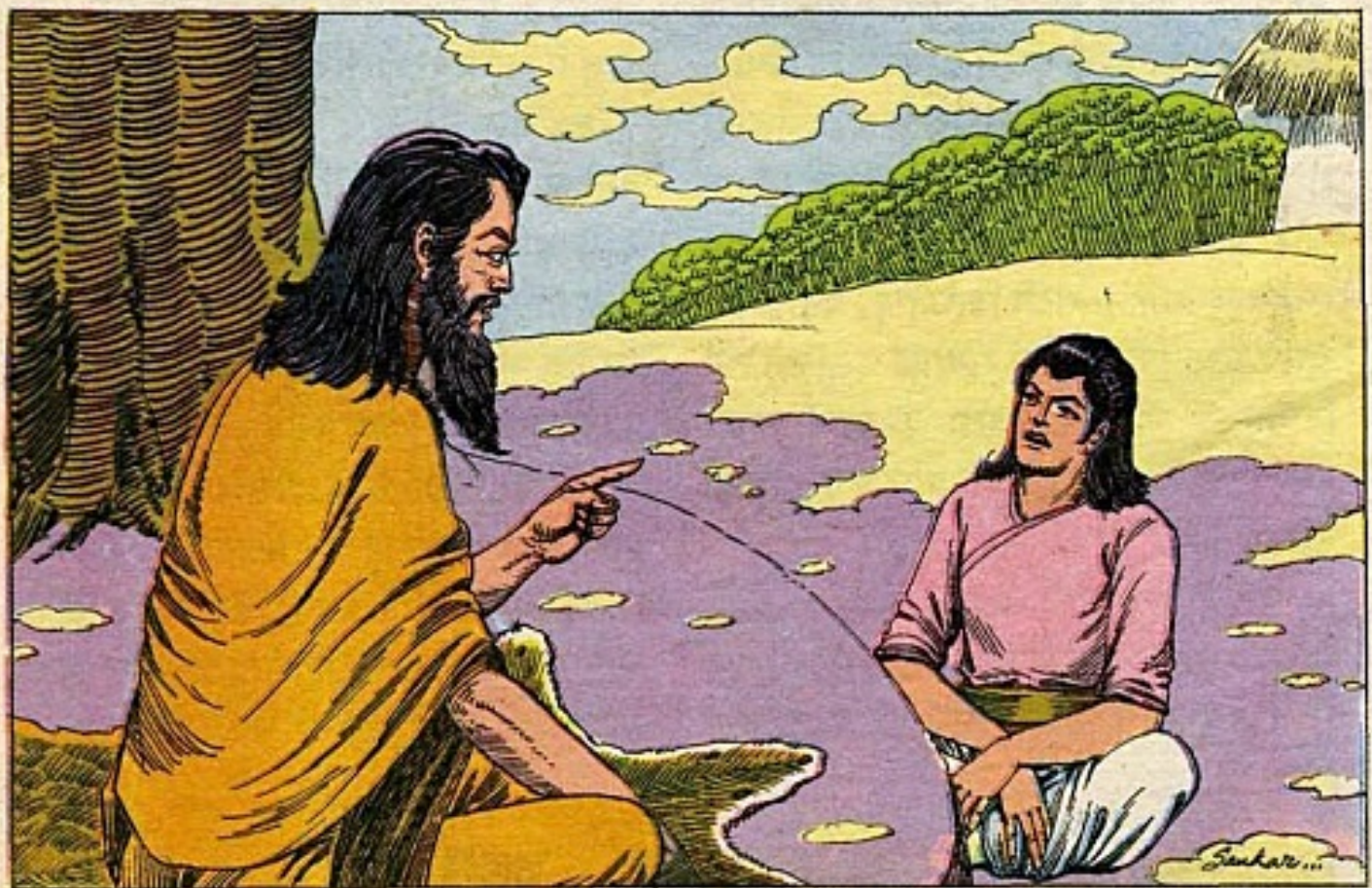
महीनों की अवधि दी । छह महीने वहीं उनके साथ रहने की भी शर्त मैं ने रखी थी । छह महीने वहाँ रहकर भी वह उन्हें पढ़ा न पाया और लाचार होकर लौट आया । तुम यदि वह काम कर सकोगे तो तुम कमल से भी महान कहलाओगे ।"

यह सुनते ही वत्सल में अमित उत्साह जाग उठा और गुरु से पूरा विवरण लेकर वह उसी वक्त मुक्तपुर के लिये चल पड़ा ।

मुक्तपुर में क्षुरक नाम का एक नाई रहता था । बाल काटने व बदन की मालिश करने का काम वह करता था । अपने इस पेशे में वह बेजोड़ था । इस लिये वह काम में हमेशा व्यस्त रहता था । काफी पैसा भी उसने कमाया था । उसने अपना एक पक्का मकान भी बनवा लिया था । फिर भी उसने अपना पेशा नहीं छोड़ा । उसी तरह गाँव में क्षालक नाम का एक धोबी था और तन्तुवाय नामक एक जुलाहा था । ये दोनों भी अपने-अपने पेशे में बेजोड़ थे और ख़ूब पैसा कमाकर अच्छे ख़ासे मकान वगैरह बनवा चुके थे । फिर भी इन तीनों पेशेवरों की एक ख़ास यह विशेषता रही थी कि इन्हें काला अक्षर भैंस बराबर था ।

इन तीनों पेशेवरों को पढ़ाने के लिये ही वत्सल मुक्तपुर पहुँचा था । वत्सल पहले क्षुरक के घर पहुँचा । उसका घर, संपति व वैभव देखकर वत्सल चौंक उठा!

अपने आने का कारण बताने पर वत्सल से क्षुरक ने कहा, "महोदय, मेरा पेशा ही मेरी पढ़ाई है । अलग से पढ़ने के लिये मेरे पास न वक्त है और न उत्साह भी । हरिकथा
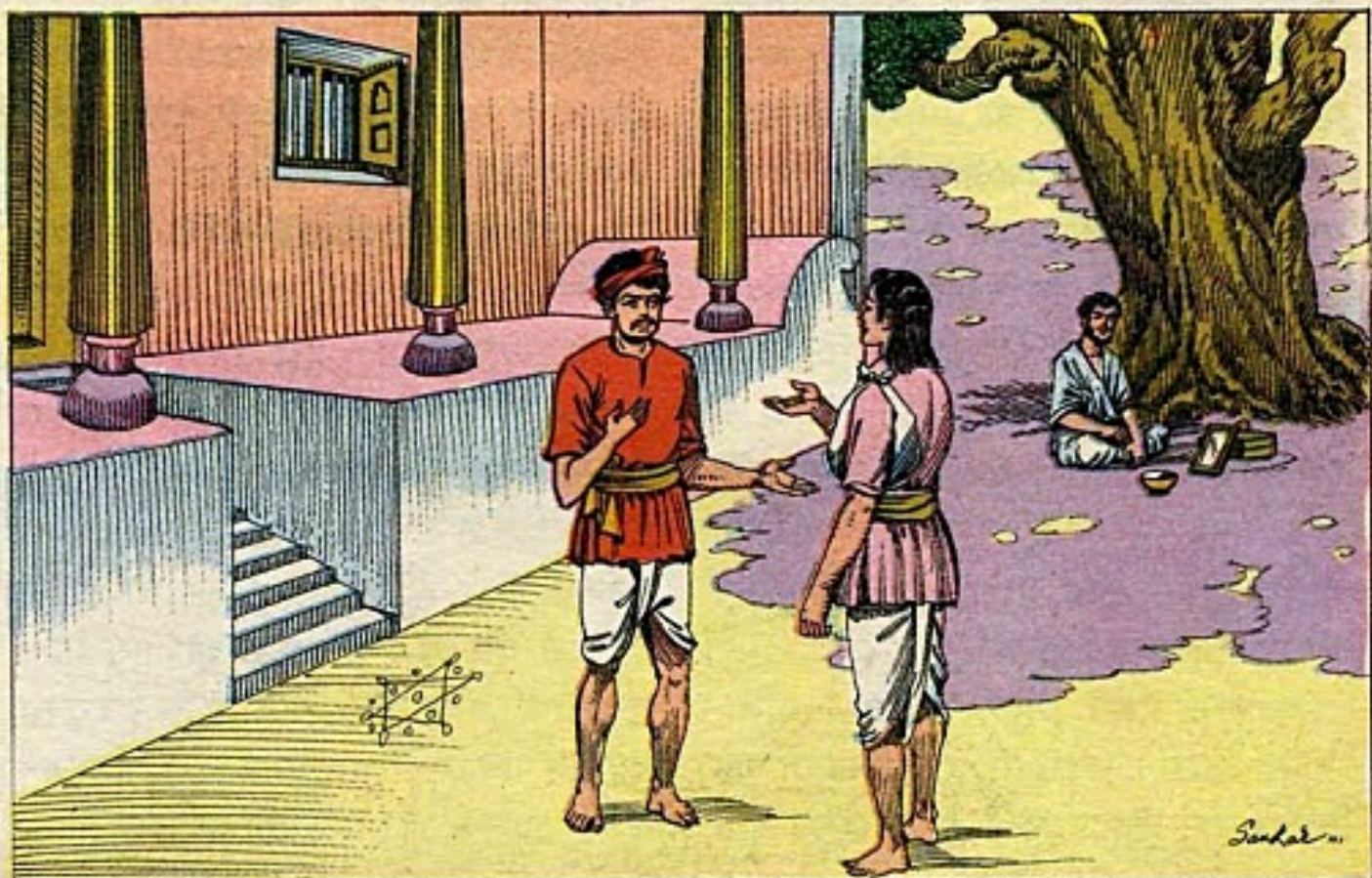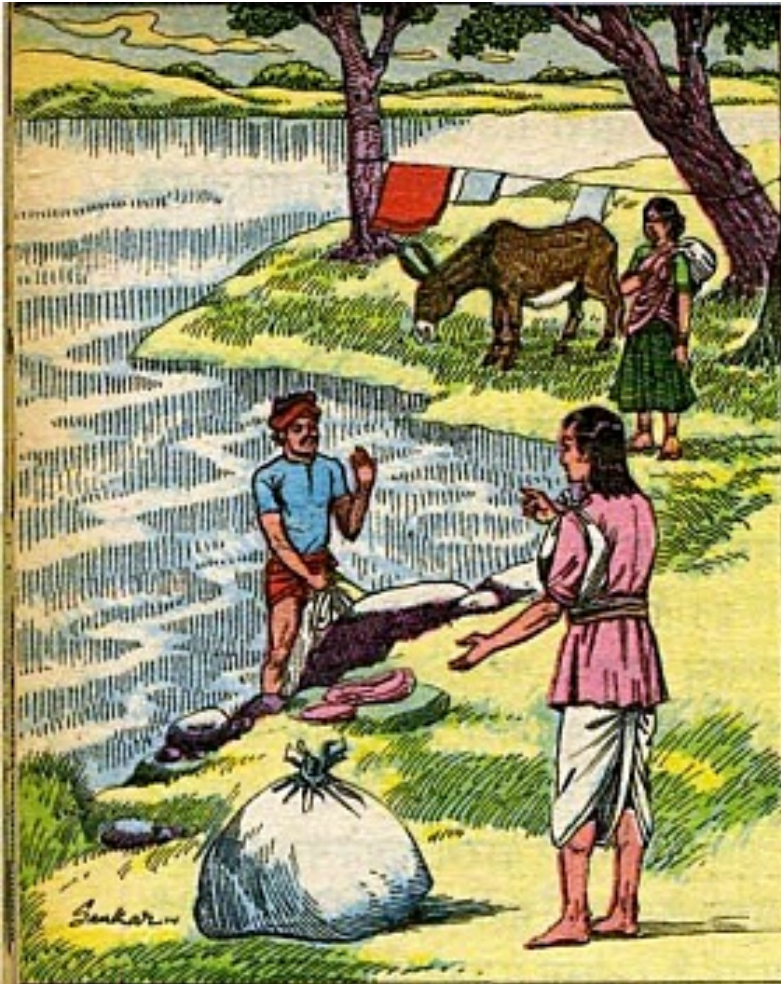
और पुराणकथाएँ सुनने से जो ज्ञान मिलता है, वह मेरे लिए पर्याप्त है । कोई नौटंकी-नाटक वगैरह देखने से मेरा जो मनोरंजन होता है वही काफी है मुझे! अब फिर विशेष रूप से पढ़ने की मुझे क्या ज़रूरत है?"

"कहा जाता है, कि विद्याहीन व्यक्ति पशु के बराबर होता है । तुम ने इतना कुछ कमाया है कि पीढ़ी दर पीढ़ी खाते बैठने से भी वह ख़तम नहीं होगा । अब अपना पेशा छोड़ दो और मेरे पास विद्याभ्यास करो । थोड़ी ही अवधि में मैं तुम्हें विद्वान बना दूँगा ।" वत्सल ने हौसले से कहा ।

इसपर हँसते हुए क्षुरक बोला, "पढ़ा-लिखा हो या न हो, हर मानव तो एक विचित्र पशु जैसा होता है । संपत्ति की बात है तो वह शाश्वत नहीं है! ऐसे में मेरी असली संपत्ति मेरा पेशा ही तो है ! इतना ही नहीं, मेरे जीते जी मेरे पेशे में मुझ से कोई बड़ा बन जाए -यह मैं सह नहीं सकता । जब तक मुझ में ताक़त होगी, तब तक मैं अपना पेशा छोड़ूँगा नहीं ।"

क्षालक और तन्तुवाय से भी वत्सल को इसी प्रकार के जवाब मिले । वत्सल को मालूम हुआ कि ये तीनों अपने अपने पेशे के विषय में एकदम ज़िद्दी हैं, फिर भी वह निराश नहीं हुआ । उनके साथ वह उनके मन में विद्या के प्रति प्रेम उपजाने की बराबर कोशिश करता ही रहा । इस तरह छह महीने बीत गये ।

वत्सल गुरुकुल लौट आया और गुरु के पास उसने अपनी हार स्वीकार की ।

वत्सल की सारी बातें सुनकर हँसते हुए सुबोध ने कहा, "स्वास्थ्य के लिये आदमी व्यायाम करता है, मगर आखेट पर ही निर्भर रहनेवाले खूँख्वार जानवर अपनी शारीरिक शक्ति बढ़ाने के लिये अलग रूप में कोई व्यायाम नहीं करते । वह उनके जीवन का अभिन्न अंग बनकर उनके दैनंदिन व्यवहारों से जुड़ा रहता है । उसी प्रकार किसी पेशे में प्रवीण व्यक्ति को विद्याभ्यास की कोई ख़ास ज़रूरत नज़र नहीं आती । इस दुनिया में बहुत से ऐसे लोग हैं, जो विद्याभ्यास सिर्फ़ ज़रूरत की वजह से करते हैं, न कि हर तरह का ज्ञान पाने की अभिलाषा से! तुम्हें भी अगर क्षुरक, क्षालक और तन्तुवाय की तरह किसी

पेशे का ज्ञान मिला होता, तो तुम भी विद्या के प्रति इतनी रुचि नहीं दिखा पाते। तुम ने अपनी ज़रूरत की पूर्ति के लिये ही विद्याभ्यास किया है। लेकिन कमल ने सिर्फ़ ज्ञान की अभिलाषा से विद्यार्जन किया था, इसीलिये वह हर वक़्त तुम से महान रहेगा।"

"गुरुदेव, कमल भी तो क्षुरक, क्षालक और तन्तुवाय को पढ़ाने में असफल रहा था। मगर इस बार भी आप ने मेरी तुलना कमल से करके मेरे दिल को छोटा करने का प्रयत्न क्यों किया?" खीजकर वत्सल ने पूछा।

"तुम तीनों को पढ़ाने के लिए मुक्तपुर जाकर छह महीने वहाँ रह चुके हो और अपना दायित्व निभाने में असफल होकर लौट आये हो। क्या तुम जानते हो, कि विद्या के प्रति गाढ़ी अभिलाषा रखनेवाले क्या करते हैं?" सुबोध ने पूछा।

बहुत सोचने पर भी वत्सल सुबोध के मन की बात पहचान नहीं सका। तब गम्भीर स्वर में सुबोध बोल उठा, "क्या तुम जानते हो, कि कमल ने क्या किया? उन छह मासों में उन के पास रह कर उसने उनके तीनों पेशे सीख कर विद्या के प्रति अपनी अभिलाषा दिखा दी।"

यह सुनकर वत्सल का चेहरा फ़ीका पड़ गया। "कमल जैसे महान पंडित को उन विद्याओं की क्या ज़रूरत?" आश्चर्य से उसने पूछा।

"उसके और तुम्हारे बीच यही तो अन्तर है! तुम पढ़ने के लिये ज़रूरत की बात सोचते हो, लेकिन कमल ऐसा नहीं है। जो विद्या वह खुद नहीं जानता, उसे सीखने की अभिलाषा उसके मन में सदैव जागृत रहती है। मुक्तपुर में छह महीने बिताकर उसने वक़्त बेकार नहीं होने दिया। उन्हें वह पढ़ा नहीं पाया, फिर भी उस अवधि में वह तीन पेशेवर विद्याएँ सीखकर आया।" सुबोध ने कहा।

अब वत्सल की समझ में आया कि गुरु सुबोध कमल को क्यों असली शिक्षाप्रेमी मानते हैं। इसके बाद उसने कमल से अपनी तुलना करके कुछ बोलने का मौक़ा ही अपने गुरु को नहीं दिया, क्यों कि अपनी ख़ामी उसे अच्छी तरह समझ में आयी थी।

सुलताना की सूदखोरी

फारस का नया सुलतान था सैयद अब्दुल्ला। मनोरंजन के कार्यक्रमों में उसे विशेष दिलचस्पी रहती थी। इन कार्यक्रमों पर पहले ही साल उसने दो लाख दीनार खर्च किये। हर साल अगर इस तरह सुलतान के मनोरंजन पर इतना खर्चा किया जाय तो शासन के ज़रूरी कामों के लिये ख़ज़ाने का बाकी पैसा काफी कैसे होगा? फिर जन-कल्याणकारी नयी योजनाओं को कैसे कार्यान्वित किया जा सकेगा?

सुलतान और वज़ीर इस समस्या के बारे में सोचने लगे। आख़िर काफी विचार-विमर्श के बाद दोनों इस निर्णय पर पहुँचे की राज्य में कानूनन सूदखोरी को इजाज़त दी जाय और सूदखोरों से कर वसूल करें। इससे ज़रूरतमन्दों को कर्ज़ मिलता रहेगा, सूदखोरों को सूद मिलेगा और खज़ाने भी भरते रहेंगे! आम के आम और गुठली के दाम!

आजकल कभी गाँठ में पैसा नहीं होता, तो लोगों को बहुत परेशानी होती है। साहूकारी का व्यवसाय करनेवाले लोग न के बराबर हैं। क्योंकि लोग मानते थे कि सूद का धंधा करना कानून को गवारा नहीं है। इस लिए कई बार लोगों को बड़ी ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।

तुरन्त सूदखोरी को कानूनन अमल में लाते हुए सुलतान ने यह भी ऐलान किया कि उधार लेकर जो पैसा नहीं चुकाएँगे, उन्हें सज़ाएँ दी जायेंगी। इस कानून के अमल में आते ही अमीर लोग खुश हुए। वे सोचने लगे-चलो, अब पाँचों उंगलियाँ घी में होंगी। चाह कर भी अब तक जो नहीं कर सके, उसे अब खूब करेंगे। साहूकारी का व्यवसाय आज तक कर नहीं सकते थे। अब तो कानून ने उसे मंजूर कर लिया है। गरज़मन्द लोग कितना भी सूद देने के लिए तैयार होते हैं। पैसा वसूल तो

फारसी लोककथा

होगा ही। जो नहीं देंगे उन को जेल जाना पड़ेगा। सुलतान ने जो कुछ किया, बहुत अच्छा किया! वे लोगों को कर्ज़ देकर मनमाना सूद लेने लगे। यदि कोई पूछने लगे कि इतना ज़्यादा सूद आप क्यों लेते हैं, तो वे जवाब देते, "मुहर्रिर को वेतन देना पड़ता है। सुलतान को कर देना पड़ता है। आख़िर इससे जो कुछ बचता है, उसीसे तो हमें अपना गुज़ारा करना पड़ता है न? इससे कम ब्याज़ पर तो हम अपना धन्धा कर ही नहीं सकते।"

कानून के अमल में आने के थोड़े दिनों बाद सुलतान की बीवी सुलताना के मन में विचार आया कि नये कानून से लोग खुश हैं या नहीं, यह बात आजमाए। उसने अपनी एक बाँदी को बुला कर इस के बारे में पूछा।

"सूदखोरी अच्छी चल रही है मालकिन! अमीर लोग ग़रीबों का ख़ून चूस रहे हैं। लाचार होकर उधार लेनेवाले जेलों में ठूँसे जा रहे हैं। अब पूरे शहर में हर ओर, हर घर अशान्ति की आग में जलता राख होता नज़र आ रहा है।"

यह बात सुनकर सुलताना को बड़ा सदमा पहुँचा। सुलतान के साथ उसने भी विश्वास किया था कि सूदखोरी से एक ओर लोगों को काफ़ी फ़ायदा होगा और दूसरी ओर सरकार को भी कर के रूप में अच्छी आमदनी होगी। लेकिन अब बाँदी की बातों से सूदखोरी के असली रँगरूप को सुलताना ने भली भाँति पहचान लिया।
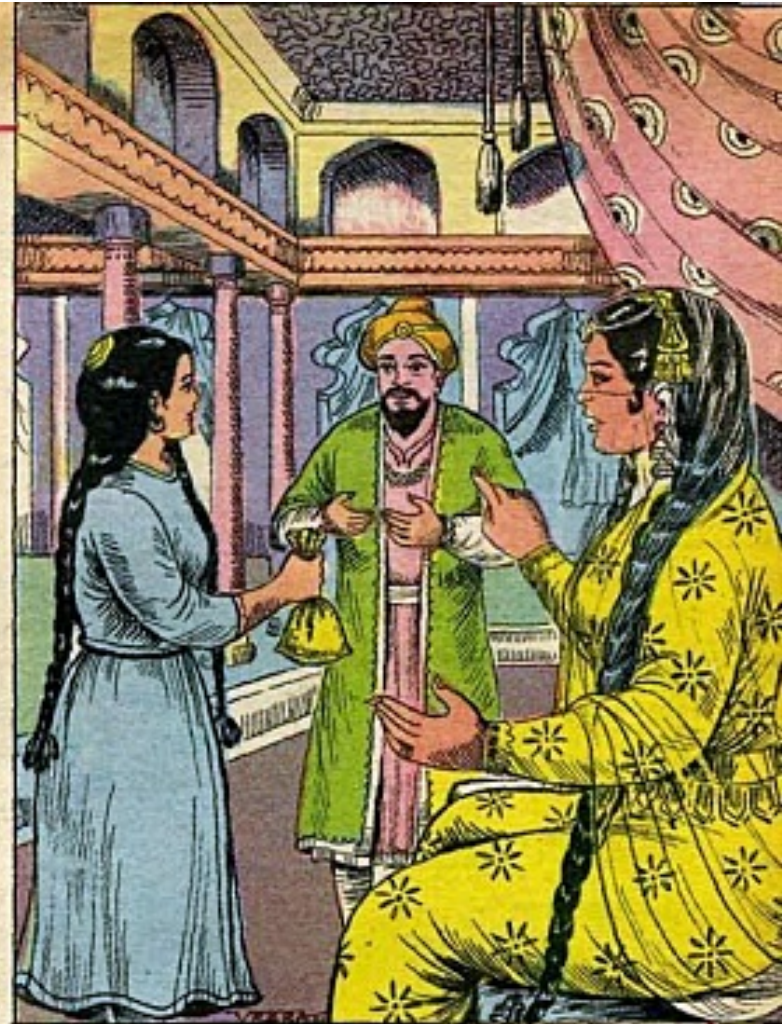
सुलताना ने सुलतान से इस बारे में बातचीत भी की। लेकिन सुलतान ने कहा, "सूदखोर जो ब्याज माँगेगा, वह दे पानेवाले को ही उधार लेना चाहिए। उधार लेकर बाद में जो चुकता नहीं करेंगे वे कानूनन अपराधी हैं।"

"अच्छा, ऐसी बात है तो मैं भी सूदखोरी का धंधा करूंगी। एक हज़ार दीनार आप मुझे दिलवाइए। सब की तरह मैं भी आप को कर दे दूँगी। आप की आमदनी भी कुछ बढ़ जाएगी।" सुलताना ने कहा।

सुलतान ने उसे खुशी खुशी इस की इजाज़त दे दी।

दीवान के सब लोगों को पता चला कि सुलताना अब ब्याज़-बट्टे का धन्धा कर रही है।

शाही महल के पहरेदार एक गरीब आदमी ने सुलताना से सौ दीनार उधार में लेकर पचास दीनार ब्याज देने का वादा किया और उसका कर्ज़दार बनकर चला गया। वैसे ही एक सरदार ने भी उससे दो सौ दीनार लेकर पचास दीनार ब्याज देने का वादा किया। आखिर वज़ीर ने भी सुलताना से पाँच सौ दीनार का कर्ज़ लिया और सौ दीनार ब्याज़ देने को कबूल किया।

कुछ समय गुज़रा। एक दिन सुलतान शहर में अकेला घूमने निकला। सारे शहर में घूमकर वह शहर के एक छोर पर पहुँचा, तब उसे ज़ोरदार भूख महसूस हुई। सुलतान को नज़दीक ही एक गरीब आदमी का घर दिखाई दिया। घोड़े से उतर कर उसने उस घर का दरवाज़ा खटखटाया।

गरीब आदमी ने दरवाज़ा खोला और सुलतान को अपने घर देखकर हैरान हो गया। झुक-झुककर सलाम करता हुआ वह उसे अपने घर के भीतर ले गया।

"भूख लगी है, खाना चाहिए मुझे।" बैठते हुए सुलतान ने कहा।

"आप ज़रा आराम कीजिए, अभी आप के खाने का इन्तज़ाम किये देता हूँ।" कहकर वह आदमी दौड़ा दौड़ा पास के एक अमीर आदमी के पास पहुँचा। उससे पचास दीनार कर्ज़ में लेकर वह बाज़ार गया। उसने शाही खाना के लिए आवश्यक चीज़ें खरीदीं, घर लौटा। फिर बढ़िया शाही खाना बनवाकर सुलतान को परोसा।

खाना देखकर सुलतान चौंक उठा, क्योंकि वह खाना शाही खाने से किसी तरह कम दर्ज़े का नहीं था। उसने यह सोचा, कि ऐसे खाने का इन्तज़ाम करने के लिये इस बेचारे आदमी ने ज़रूर कहीं से कर्ज़ लिया होगा। इस लिये, राजमहल लौटते ही सुलतान ने वज़ीर को बुलाया, और एक हज़ार दीनार उसे सौंपते हुए कहा कि वह रक़म उस ग़रीब के घर पहुँचा दे, जहाँ उसने खाना खाया था।

वज़ीर के हाथ रकम आते ही सुलताना ने उसे बुलाया और ब्याज़ समेत छह सौ दीनार तुरन्त चुकाने को कहा। लाचार होकर वज़ीर ने उन हज़ार दीनारों में से छह सौ दीनार सुलताना को अदा कर दिये। इसके बाद वज़ीर ने सरदार को बुलाकर बाक़ी चार सौ

दीनार उसके हाथ सौंपे और कहा, "यह रक़म सुलतान की तरफ से है, अमुक गरीब आदमी को पहुँचा दो ।"

यह बात जानकर सुलताना ने फ़ौरन उस सरदार को बुलवा कर उससे भी ब्याज समेत अपनी ढाई सौ दीनारों की रक़म वसूल कर ली । फिर सरदार ने शाही महल के पहरेदार को बाक़ी डेढ सौ दीनार देकर कहा कि फलाँ जगह जाकर फलाँ आदमी को वह रक़म पहुँचा दे ।

लेकिन सुलताना ने उस पहरेदार को भी बुलवा कर अपने डेढ़ सौ दीनार तुरन्त चुकाने का हुक्म दे दिया । उसने भी भीगी बिल्ली बनकर अपने हाथ की सारी रक़म चुपचाप सुलताना को दे दी ।

कुछ दिन बीत गये । एक दिन एक अमीर ने एक ग़रीब को दरबार में पेश करके कहा कि उस ग़रीब ने अपने यहाँ से कर्ज़ लेकर चुकाया नहीं है । राजा ने उस ग़रीब को पहचाना और पूछा, "तुमने कर्ज़ा किस लिए लिया था?"

"खाविन्द, एक दिन आप मेरे घर अतिथि बनकर आये थे । उस दिन आप का यथोचित सत्कार करने के लिए मैं ने इस अमीर से कर्ज़ा लिया, लेकिन समय पर उसे चुका नहीं पाया ।" गरीब आदमी ने कह दिया ।

"मगर उसी दिन मैं ने जो एक हज़ार दीनार तुम्हारे पास पुरस्कार के रूप में भेज दिये थे, उसका तुम ने क्या किया? अपना कर्ज़ा क्यों नहीं चुकाया?" सुलतान ने पूछा ।

हैरत में आकर गरीब आदमी बोल उठा, "कैसे दीनार सरकार? मेरे पास तो एक दीनार भी नहीं पहुँचा हुज़ूर!"

सुलतान ने इस पर वज़ीर की तरफ़ देखा तो उसने तुरन्त उठकर कहा कि उस रकम से छह सौ दीनार सुलताना का कर्ज़ अदा करने के लिए खुद लाचार हो वह ले चुका था और बाक़ी के चार सौ दीनार इस ग़रीब को देने के लिए सरदार के हाथ दे दिये ।

सरदार व उसके बाद पहरेदार ने भी अपनी अपनी लाचारी की कैफ़ियत सुनाते हुए कहा कि उन्हें वह रक़म सुलताना का कर्ज़ा चुकाने के लिये खर्च करनी पड़ी ।

"तब तो तुम तीनों अपराधी हो । अपनी शक्ति के बाहर कर्ज़ा लेना अपराध है और

सरकार का पैसा अपनाकर खर्च करना एक और अपराध है । इसलिए तुम तीनों को मैं दो-दो साल की जेल की सज़ा सुना रहा हूँ ।" सुलतान ने उनको सज़ा फर्मायी ।

फिर उस ग़रीब की ओर देखकर उसने कहा, "निरे दरिद्र होकर भी तुमने कर्ज़ क्यों लिया? क्या मैं ने तुम से शाही खाना माँगा था? ताक़त के बाहर तुम ने कर्ज़ लिया, इसलिये तुम्हें भी मैं एक साल की जेल की सज़ा सुना रहा हूँ ।"

फिर भी सुलतान का मन अशान्त रहा । उस ने सुलताना से कहा, "अब तुम अपना सूदखोरी का धंधा छोड़ दो ।"

"ऐसा क्यों? मेरे धन्धे से आप क्यों परेशान हैं?" सुलताना ने पूछा ।

"क्यों कि तुम्हारे धन्धे की वजह से आज मैं ने चार लोगों को जेल में भेजा है । तुम्हारे धन्धे से जो सौ दीनारों की कमाई हुई थी, उस से क्या इन को दो साल जेल में रखकर खिलाना मुमकिन होगा?" सुलतान ने पूछा ।

सुलताना ने उसी वक़्त कागज़ और क़लम लेकर गिनगिनकर हिसाब लगाया और कहा, "उन चारों पर सालाना खर्च आठ सौ दीनार तो होगा ही-यानी, दो सालों का उनका खर्चा एक हज़ार, छह सौ दीनार होगा ।"

"देखा न, तुम्हारी सूदखोरी से ख़ज़ाने को कितना नुकसान हो रहा है?" सुलतान ने कहा ।

"हाँ, अब आप ही कहिये, कि आप ने जो सूदखोरी को अमल में ला खड़ा किया, उससे आमदनी कितनी होती है?" सुलताना ने पूछा ।

"दो लाख दीनार ।" सुलतान ने जवाब में कहा ।

"कर्ज़ चुका न पाने के कारण अब तक कितने लोग जेल में हैं?" सुलताना ने पूछा ।

"लगभग बीस हज़ार!" सुलतान ने बता दिया ।

सुलताना ने हिसाब लगाकर छाती पीटते हुए कहा, "या अल्लाह! उन पर सालाना खर्च दस लाख दीनार!"

दूसरे ही दिन शहर में सूदखोरी के धन्धेवाला कानून रद्द कर दिया गया ।
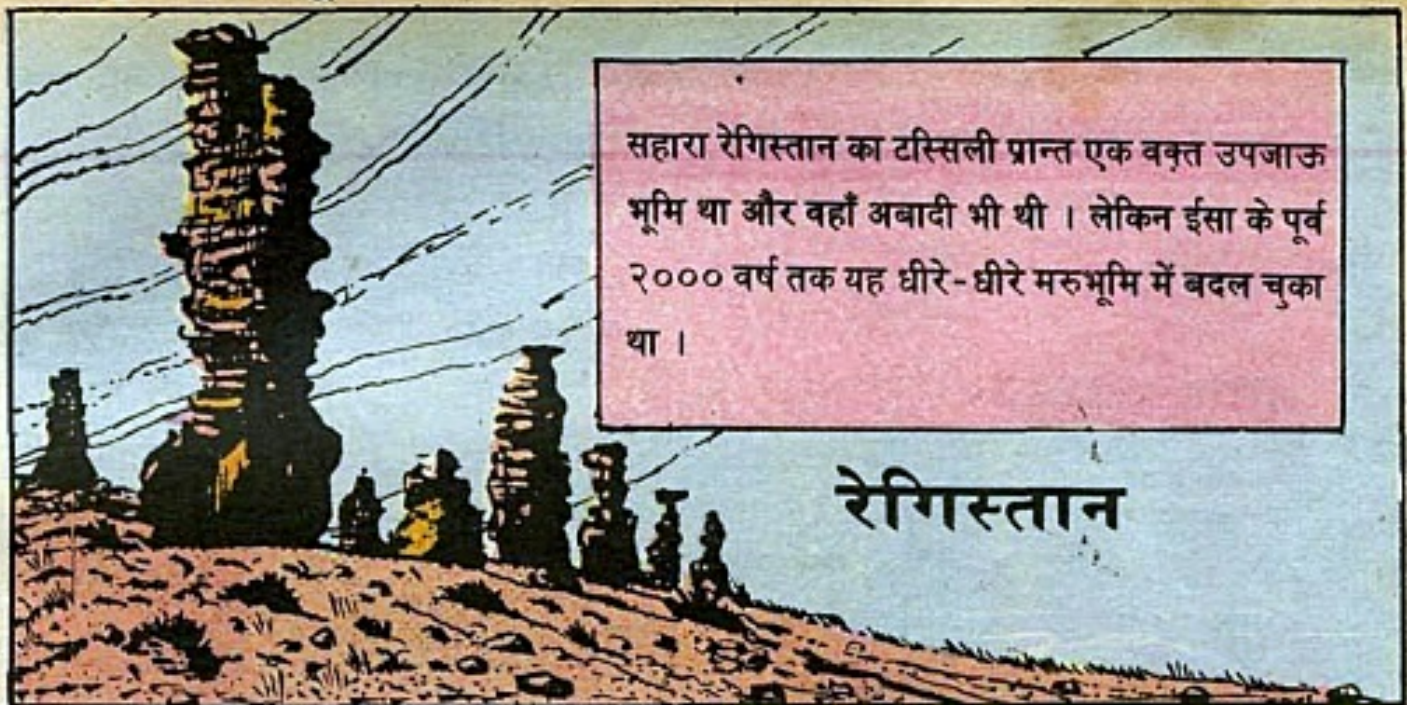
रेगिस्तान

सहारा रेगिस्तान का टस्सिली प्रान्त एक वक़्त उपजाऊ भूमि था और वहाँ अबादी भी थी । लेकिन ईसा के पूर्व २००० वर्ष तक यह धीरे-धीरे मरुभूमि में बदल चुका था ।

बीवर की पूँछ

'बीवर' कहलानेवाला ऊदबिलाव धरती पर और पानी में भी रहता है । इसकी पूँछ चौड़ी और चपटी होती है, जो तैरते वक़्त पतवार का काम करती है । जब यह अपनी पूँछ पानी पर दे मारता है, तो वह ध्वनि कुछ अदद मीलों तक सुनायी देती है और एक सचेत-संकेत की तरह यह काम आती है ।

भारी कीटक

दुनिया भर में सब से भारी कीड़ा है 'गोलियथ बीटल' जो अफ्रीका के विषुवरेखा प्रान्त में पाया जाता है । इन में नर कीड़ा १०० ग्राम भारी और ११० मि. मी. लंबा होता है ।

RAMBO IV
No more evil, injustice and crime will be tolerated in this city. The relentless crusader is here. With his famed Zap Gun (the three sound gizmo that's the terror of the underworld) and his fleet of rough 'n tough ready-for-action vehicles — Wrecker, Super Dumper and Fire Engine. And of course, his missile-firing Helicopter. So...breathe easy. The one man army is here.
SAMMO
Mechanical and electronic toys
CHANDAMAMA TOYTRONIX
In collaboration with Sammo Corporation, S.Korea
Chandamama Toytronix Private Limited, Chandamama Buildings, 188, NSK Salai, Vadapalani, Madras 600 026
Mudra:M CTPL 4093

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ दिसम्बर १९९० के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

R. P. Ram

M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ अक्तूबर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६

अगस्त १९९० की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो : पढ़ने का मज़ा!

द्वितीय फोटो : यह कैसी सज़ा!!

प्रेषक : विक्रम सिंह नेगी, ४/१२९, खिचड़ीपुर कॉलोनी, दिल्ली-११० ०९१.

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ३६/-

चन्दा भेजने का पता :

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

The stories, articles and designs contained herein are exclusive property of the Publishers and copying or adapting them in any manner will be dealt with according to law.

अपने प्यारे चहेते के लिए जो हो दूर सुदूर
है न यहाँ अनोखा उपहार जो होगा प्यार भरपूर

चन्दामामा

सर्क्युलेशन मैनेजर, चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

Ta dum,
They
is here
Oops!
Kiddy grammar
sure is catchy—Ya,
they are here.
Bow Wow 'n' Floppy the doggies (wuff! wuff!), Jumbo the elephant, Wobbit the rabbit, Teddy 'n' Sporty your bear buddies, the mouse of your house—Squeeks,. not to mention Flipper the dolphin 'n' Bunny with the Twins. They are all part of the CUDDLES family. And hang on—there's more to come.
The one thing we didn't do while making our toys was fool around. We left that entirely for your kid to do. Come, check us out.
What stuffing to use, what shape to give, which colour to use...... We've spent long months in designing and crafting the toys which can take on the toughest torture test ever—childhandling. To ensure that they're safe.
CUDDLES
CHANDAMAMA TOYTRONIX
In collaboration with Sammo Corporation, S.Korea
Chandamama Buildings, 188, NSK Salai, Vadapalani, Madras-600 026.
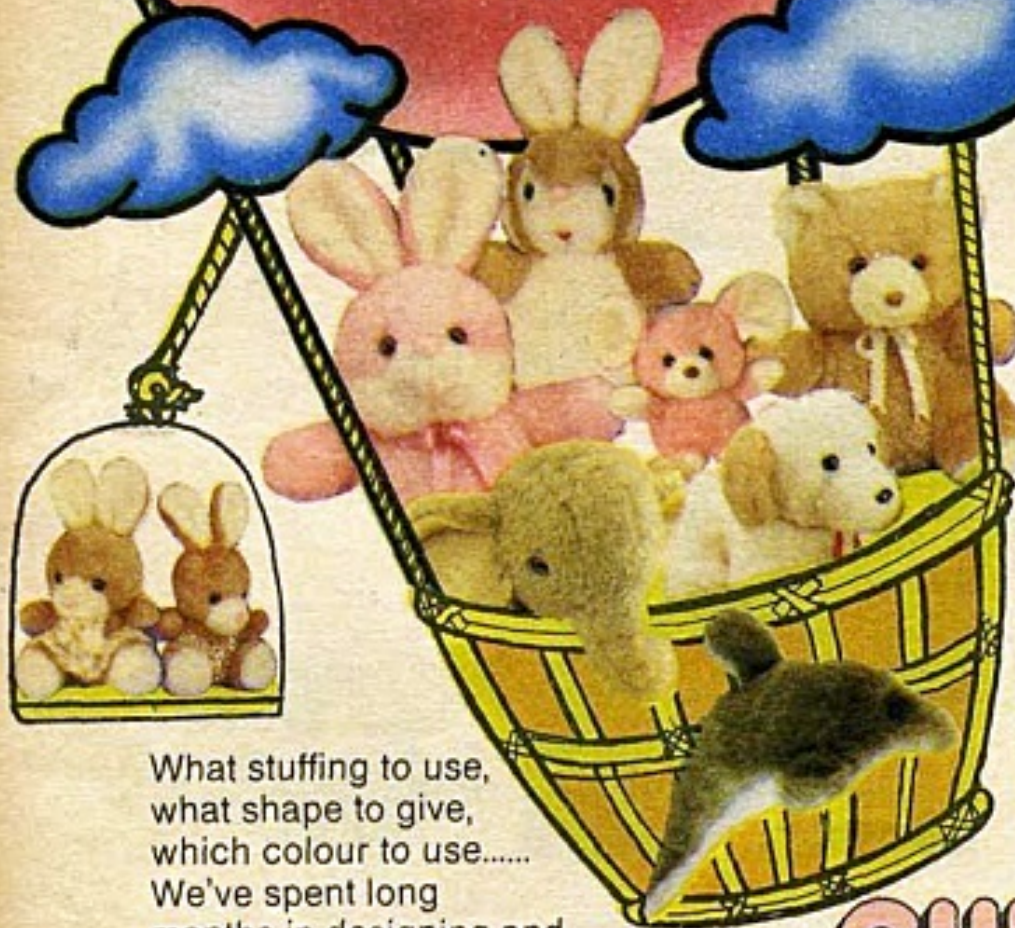
CHANDAMAMA (Hindi) October 1990 Regd. No. M.